राजभाषा गृह पत्रिका 2025-26

अन्नालयम

छठा अंक

भारतीय खाद्य निगम
तमिलनाडु क्षेत्र

अन्नालयम छठा अंक

दिनांक 20 नवंबर, 2025 को तिरुपति में माननीय ससंदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा मंडल कार्यालय, चेन्नै का निरीक्षण के झलकियां

दिनांक 29 अक्तूबर, 2025 को पुदेचेरी में माननीय ससंदीय राजभाषा समिति की साक्ष्य एवं मौखिक समिति द्वारा मंडल कार्यालय, वेल्लोर का निरीक्षण

रबिंद्र अग्रवाल
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
मुख्यालय, नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, तमिलनाडु क्षेत्र द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति को सुदृढ़ बनाने की दिशा में राजभाषा गृह पत्रिका 'अन्नालयम' एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह प्रसन्नता का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उपक्रम, चेन्नै के माध्यम से 'अन्नालयम' को गृह पत्रिका की श्रेणी में पुरस्कृत किया गया है।

तमिलनाडु क्षेत्र के अंतर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै के साथ सभी मंडल कार्यालयों में भी राजभाषा कार्यान्वयन को पूरी निष्ठा से लागू करने का कार्य प्रगति पर है। कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का उचित कार्यान्वयन एवं राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशानिर्देशों का शत–प्रतिशत अनुपालन प्रत्येक कार्मिक की नैतिक जिम्मेदारी है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल होगी तथा कार्मिकों को अपने दैनिक सरकारी कार्यों में हिंदी के सरल, सहज एवं उत्साहवर्धक प्रयोग हेतु प्रेरित करेगी। 'अन्नालयम' के समस्त रचनाकारों तथा इसके प्रकाशन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

रबिन्द्र

(रबिंद्र अग्रवाल)

जयंत शर्मा
कार्यकारी निदेशक(राजभाषा)
मुख्यालय, नई दिल्ली

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै अपनी गृह–पत्रिका 'अन्नालयम' के छठे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

''अन्नालयम' पत्रिका का प्रकाशन, कार्मिकों की लेखन क्षमता तथा संप्रेषण कौशल को व्यक्त करने का एक प्रभावी माध्यम है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने का एक प्रभावी माध्यम है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होगी।

हिंदी पत्रिका 'अन्नालयम' के छठे अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से पत्रिका के संपादक मंडल तथा रचनाकारों को ढेरों शुभकामनाएँ।

जयंत शर्मा

(जयंत शर्मा)

जेसिंता लासरस
कार्यकारी निदेशक(दक्षिण)
आंचलिक कार्यालय(दक्षिणांचल), चेन्नै

संदेश

यह अत्यंत खुशी की बात है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए प्रकाशित पत्रिका 'अन्नालयम' के छठे अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस पत्रिका में तमिलनाडु क्षेत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनाएं तथा विविध गतिविधियां सम्मिलित हैं। पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी इसी प्रकार अपना योगदान राजभाषा की प्रगति व प्रसार में देते रहें।

'अन्नालयम' पत्रिका क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के रचनात्मक कौशल को प्रकाशित करने का एक सशक्त माध्यम है। इस पत्रिका के माध्यम से भावनाओं, संस्कृतियों तथा परंपराओं को जानने का अवसर प्राप्त होगा।

''अन्नालयम' पत्रिका के छठे अंक के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों, संपदाकीय मंडल तथा इससे जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

जेसिंता

(जेसिंता लासरस)

हर्षित सिंह
महाप्रबंधक(राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय(दक्षिणांचल), चेन्नै

संदेश

राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका 'अन्नालयम' का तमिलनाडु के स्तर पर प्रकाशन किया जाना राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। पत्रिका का प्रकाशन निगम के अधिकारियों/ कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को उजागर करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करती है।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता है कि भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनाएं फोटो सहित इस पत्रिका में प्रकाशित की जाती है। इससे सभी कार्मिकों को हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने की प्रेरणा मिलती है तथा वे कार्यालयीन कार्यों में स्वयं सक्रिय होकर कार्य करने एवं दूसरों को भी प्रोत्साहित करने के लिए प्रेरित होते हैं।

मैं 'अन्नालयम' पत्रिका के छठे अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(हर्षित सिंह)

प मुत्तुमारन
महाप्रबंधक(क्षेत्र)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

प्रधान संरक्षक

हम सबके लिए यह अत्यंत गौरव का विषय है कि विभिन्न रचनाओं से सुसज्जित क्षेत्रीय राजभाषा गृह पत्रिका 'अन्नालयम' के छठे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए पत्रिका एक सशक्त माध्यम है और हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति हमारा समर्पण दर्शाता है।

केंद्र सरकार के काम–काज में राजभाषा कार्यान्वयन एक महत्वपूर्ण पहलू होता है और भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र में हम इसे उतना ही महत्व और सम्मान देते हैं। गत वर्ष हमारे 02 अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण माननीय संसदीय राजभाषा समिति की उप समितियों द्वारा किया गया और माननीय समिति ने इन निरीक्षणों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर संतोष जताया। यह राजभाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का परिणाम है।

एक संगठन के रुप में भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने राजभाषा के विकास व संवर्धन के लिए बहुत ही सराहनीय कार्य किया है और भारत सरकार द्वारा दिए गए लक्ष्यों से आगे बढ़कर कार्य कर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(उपक्रम), चेन्नै द्वारा 2024-25 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु तृतीय पुरस्कार एवं उत्कृष्ट राजभाषा गृह पत्रिका के प्रकाशन हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया है।

कार्यालयीन कार्य में व्यस्तता के बावजूद सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने राजभाषा हिंदी के प्रति जिस निष्ठा का परिचय दिया है वह अपने आप में प्रशंसनीय है। मैं सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि उनके विचारों से पाठकगण भी लाभान्वित होंगे।

'अन्नालयम' पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन की कामना करते हुए राजभाषा कार्य से जुड़े सभी कार्मिकों को मैं अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

प. मुत्तुमारन

(प मुत्तुमारन)

अन्नालयम छठा अंक

अरुण कुमार
उप महाप्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

संरक्षक

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै की राजभाषा गृह पत्रिका 'अन्नालयम' के इस नवीन अंक के माध्यम से आप सभी को पुन: एक बार संबोधित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं संतोष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय की राजभाषा संबंधी प्रतिबद्धता, रचनात्मक ऊर्जा और सामूहिक सहभागिता का सशक्त प्रतिबिंब है।

मानव जीवन विचारों, भावनाओं और अनुभवों की सतत धारा है। हमारे हृदय, मन और मस्तिष्क में प्रतिदिन अनगिनत विचार जन्म लेते हैं। मन क्षण भर में एक विचार से दूसरे विचार की ओर अग्रसर हो जाता है। अनेक बार हम अपने भीतर उठने वाली भावनाओं, अनुभूतियों और तथ्यों को अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं, परंतु उन्हें उचित शब्द देना एक कला है। मन में उठने वाले इन भावों एवं विचारों को अपने शब्दों में पिरोना ही लेखन कौशल कहलाता है। गृह पत्रिका 'अन्नालयम' का उद्देश्य इसी सृजनात्मक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित एवं सुदृढ़ करना है। यह पत्रिका न केवल साहित्यिक अभिरुचि को बढ़ावा देती है, बल्कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन को भी सशक्त बनाती है। इसके माध्यम से कार्मिकों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे भाषा के प्रति आत्मीयता और आत्मविश्वास दोनों का विकास होता है।

कार्यालय के कार्मिकों द्वारा निरंतर लेख, कहानी, कविता आदि रचनात्मक विधाओं के माध्यम से 'अन्नालयम' पत्रिका में निरंतर योगदान देने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को मैं अपनी ओर से साधुवाद देता हूँ तथा 'अन्नालयम' पत्रिका के सफल एवं सार्थक प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(अरुण कुमार)

संजीव कुमार
उप महाप्रबंधक(क्षेत्र)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

संदेश

मुझे यह जानकर काफी प्रसन्नता हुई कि भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै से राजभाषा गृह पत्रिका 'अन्नालयम' का छठे अंक प्रकाशित किया जा रहा है। जिसके लिए राजभाषा अनुभाग को हार्दिक बधाई।

भाषा मानव, स्थान और समय को जोड़नेवाली एक अद्भूत कडी है। यही भाषा संस्कृति और परंपरा के रूप में हमारे जीवन में बसती है और कला के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। हिंदी हमारी राजभाषा है और इसके प्रति सम्मान और लगाव हमारे राष्ट्रप्रेम को दर्शाता है। हिंदी भारत की विविधता को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है। तमिलनाडु जैसे हिंदीतर भाषी क्षेत्र में हिंदी को लोकप्रिय बनाने में 'अन्नालयम' पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। सरल और सहज होने के कारण हिंदी दैनिक कार्यालयीन कार्यों के निष्पादन में भी अहम भूमिका निभाती है। हिदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी पहचान, अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास की शक्ति है। पत्रिका इसी उद्देश्य को आगे बढ़ाने का एक सशक्त प्रयास है। इसके माध्यम से राजभाषा नीति के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और साथ ही अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

'अन्नालयम' के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि 'अन्नालयम' निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे और सभी पाठकों को ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी सामग्री प्रदान करती रहे तथा सक्रिय होकर कार्य करने एवं दूसरे को भी प्रोत्साहित करने के लिए प्रेरित करती रहे।

संजीव कुमार

(संजीव कुमार)

गगन कुमार मिश्रा
उप महाप्रबंधक(परिचालन)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

संदेश

यह अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु 'अन्नालयम' पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यालय की राजभाषा संबंधी गतिविधियों का दर्पण है, बल्कि हिंदी के संवर्धन और क्रियान्वयन का एक सशक्त माध्यम भी है।

अभिव्यक्ति मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है और आत्मा अभिव्यक्ति के लिए मातृभाषा से बेहतर और कोई माध्यम नहीं हो सकता। भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं बल्कि विचारों, भावनाओं और संस्कारों की वाहक होती है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारी मातृभाषा हिंदी ही हमारी राजभाषा भी है। अत: हमारे लिए हिंदी में कार्यालयीन कार्य करना न केवल सरल और सहज है बल्कि गर्व का विषय भी है। हिंदी के प्रयोग से हम अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन अधिक आत्मीयता, स्पष्टता और प्रभावशीलता के साथ कर सकते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी आगे भी अपना सक्रिय एवं रचनात्मक योगदान देकर इसे और अधिक समृद्ध तथा लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडी संपूर्ण टीम की हार्दिक सराहना करता हूँ तथा छठे अंक के सफल एवं प्रभावी प्रकाशन हेतु अपनी मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(गगन कुमार मिश्रा)

अन्नालयम छठा अंक

संजय कुमार बिश्वास
उप महाप्रबंधक(सामान्य)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा क्षेत्रीय राजभाषा गृह पत्रिका 'अन्नालयम' के छठे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह प्रयास न केवल राजभाषा के प्रचार–प्रसार की दिशा में सराहनीय है, बल्कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग को भी प्रोत्साहित करता है।

हिंदी हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की भाषा है। यह विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है तथा भारत की राजभाषा है। विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी विशेषता है कि इसे जैसे बोला जाता है, वैसे ही लिखा भी जाता है। पत्रिका के इस अंक के माध्यम से मैं सभी कार्मिकों से अपेक्षा करता हूँ कि वे कार्यालयीन कार्यों में सरल, स्पष्ट और सहज हिंदी का प्रयोग करें, ताकि भाषा सभी के लिए सुगम, समझने योग्य और व्यवहार में लाने योग्य बन सके। हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग ही राजभाषा के उद्देश्य को सार्थक करेगा और हमारी कार्य संस्कृति को सशक्त बनाएगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रयोग को और अधिक बढ़ावा मिलेगा। साथ ही, वार्षिक गृह पत्रिका 'अन्नालयम' निगम के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को एक सूत्र में जोड़ने में सहायक सिद्ध होगी।

मैं 'अन्नालयम' पत्रिका के प्रकाशन से जुड़ी पूरी टीम को हार्दिक बधाई देता हूँ और सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

(संजय कुमार बिश्वास)

अन्नालयम छठा अंक

गौरव सक्सेना
उप महाप्रबंधक(लेखा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

संदेश

मुझे बताते हुए अत्यंत गर्व का अनुभव हो रहा है कि भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै अपनी क्षेत्रीय राजभाषा गृह पत्रिका 'अन्नालयम' के छठे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। यह हमारे लिए न केवल प्रसन्नता का अवसर है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का भी सशक्त प्रमाण है।

हमारी राजभाषा हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि यह हमारी चेतना, संस्कृति और सभ्यता का आधार भी है। यह वह सेतु है, जो हमारे हृदय के भावों को दूसरों तक पहुँचाती है तथा हमारी समृद्ध परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को नई पीढ़ियों तक संप्रेषित करती है। हिंदी केवल भारतवर्ष में ही नहीं, बल्कि विश्व मंच पर भी हमारी पहचान और गौरव का प्रतीक बन चुकी है। 'अन्नालयम' पत्रिका इसी दिशा में एक अनवरत प्रयास है। पिछले पांच अंकों की सफल यात्रा के उपरांत अब यह अपने छठे पढ़ाव पर पहुँच गई है। यह पत्रिका केवल लेखों और रचनाओं का संकलन मात्र नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा, रचनात्मक अभिव्यक्ति और राजभाषा संवर्धन का सशक्त मंच है। यह उन सभी कर्मठ कार्मिकों, रचनाकारों, संपादकों और मार्गदर्शकों के अथक प्रयासों का परिणाम है, जिन्होंने कार्यालय में हिंदी को एक प्रभावी, व्यावहारिक और सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी इसी प्रकार हिंदी के प्रचार–प्रसार तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच बना रहेगा और कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी इसमें उत्साहपूर्वक अपना योगदान देते रहेंगे।

मैं 'अन्नालयम' के छठे अंक के सफल, प्रभावी एवं गरिमामय प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(गौरव सक्सेना)

कामता प्रसाद
सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

सलाहकार

भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र की गतिविधियों तथा राजभाषा हिंदी के प्रति अधिकारियों एवं कर्मचारियों में जागरूकता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा अपनी राजभाषा गृह पत्रिका 'अन्नालयम' के छठे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह न केवल एक सराहनीय पहल है, बल्कि हिंदी के संवर्धन और प्रचार–प्रसार की दिशा में एक प्रेरणादायी कदम भी है।

'अन्नालयम' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि विचारों, रचनात्मकता और प्रशासनिक अनुभवों का संगम है। इसके माध्यम से निगम की विविध गतिविधियों, उपलब्धियों तथा नवाचारों को सरल और रोचक शैली में प्रस्तुत किया जा रहा है। साथ ही, यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करती है तथा उन्हें अपनी लेखन प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का सशक्त मंच प्रदान करती है।

निस्संदेह, इस छठे अंक का प्रकाशन हिंदी भाषा के प्रति समर्पण, प्रतिबद्धता और निरंतर प्रयासों का प्रतीक है। हमें विश्वास है कि 'अन्नालयम' का यह नवीन अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और अत्यंत रोचक सिद्ध होगा। हिंदी के प्रचार–प्रसार की यह यात्रा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे–इसी शुभकामना के साथ।

(कामता प्रसाद)

कुणाल कुमार गुप्ता
प्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

मुख्य संपादक की कलम से ....

तमिलनाडु क्षेत्र की राजभाषा गृह पत्रिका 'अन्नालयम' का छठा अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। 'अन्नालयम' के माध्यम से आपसे निरंतर संवाद स्थापित करना मेरे लिए गर्व और संतोष का विषय है। इस पत्रिका का मूल उद्देश्य निगम के कार्मिकों को निगम की गतिविधियों और उपलब्धियों से अवगत कराना तथा लेखन के माध्यम से रचनात्मक विचार–विमर्श को प्रोत्साहित करना है। यह मंच न केवल सूचना के आदान–प्रदान का साधन है, बल्कि प्रतिभाओं को अभिव्यक्ति देने का सशक्त माध्यम भी है।

हिंदी भाषा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और गौरवशाली परम्पराओं की संवाहक है। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र भाषा के बिना अधूरा है, क्योंकि भाषा ही विचारों, भावनाओं और ज्ञान के संप्रेषण का आधार है। किसी भी राष्ट्र की संस्कृति, इतिहास और जीवन–मूल्य उसकी भाषा में सुरक्षित और संरक्षित रहते हैं। हमारी जीवन–शैली, परम्पराएँ और ऐतिहासिक चेतना भाषा के माध्यम से ही पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्रवाहित होती हैं। अत: अपनी पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखने और सांस्कृतिक विरासत को सुदृढ़ करने के लिए हमें अपनी भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु निरंतर एवं समन्वित प्रयास करने चाहिए। सामूहिक सहभागिता और प्रतिबद्धता के बल पर हम हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग को और अधिक प्रभावी तथा व्यापक बना सकते हैं।

यह हर्ष का विषय है कि तमिलनाडु क्षेत्र के कार्मिकों के परिश्रम, लगन और दृढ़संकल्प के परिणामस्वरूप राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में निरंतर उल्लेखनीय प्रगति हो रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी भविष्य में भी अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को प्राथमिकता देंगे तथा भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु उत्साह, निष्ठा और समर्पण के साथ कार्य करते रहेंगे।

आप सभी के सतत सहयोग और सक्रिय सहभागिता से 'अन्नालयम' निश्चित ही नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा।

शुभकामनाओं सहित ।

(कुणाल कुमार गुप्ता)

अन्नालयम छठा अंक

के आर लोकेश कुमार शाह
सहायक श्रेणी.I(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

संपादकीय ....

आपके समक्ष 'अन्नालयम' पत्रिका के छठे अंक को पुन: प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत गर्व एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस अंक में तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों की विशेषताओं एवं उनके महत्व की सुंदर झलक प्रस्तुत की गई है। वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन एवं सहयोग से ही इस पत्रिका का सफल प्रकाशन संभव हो पाया है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) चेन्नै द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै को राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कृत किया गया है। साथ ही, उत्कृष्ट राजभाषा गृह पत्रिका के लिए तृतीय शील्ड पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, तमिलनाडु क्षेत्र के अंतर्गत मंडल कार्यालयों को भी राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु शील्ड पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

ये उपलब्धियाँ हिंदी भाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि यह हमारी सामाजिक परंपराओं, सभ्यता एवं सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखने का एक सशक्त माध्यम है। तमिलनाडु की समृद्ध तमिल संस्कृति के साथ हिंदी ने एक सेतु का कार्य करते हुए सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान को और सुदृढ़ किया है। बोलचाल की हिंदी एवं तमिल भाषा के माध्यम से पारस्परिक समझ और सहयोग को बढावा मिला है।

हिंदी भाषा को सभी कार्मिकों तक पहुँचाने में यह पत्रिका एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हुई है। इसका मुख्य उद्देश्य कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देना है, जिसमें हम निरंतर प्रगति कर रहे हैं। इस अंक में राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम, लक्ष्यों, पुरस्कारों, विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों एवं रचनात्मक प्रस्तुतियों को समाहित किया गया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका तमिलनाडु क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को स्पर्श करेगी तथा राजभाषा हिंदी के सतत प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं कि आगामी अंक भी ज्ञानवर्धक सिद्ध हों तथा राजभाषा के विविध आयामों को साथ लेकर उसकी प्रगति में मील का पत्थर साबित हों।

(के आर लोकेश कुमार शाह)

प मुत्तुमारन
महाप्रबंधक(क्षेत्र)
प्रधान संरक्षक

अरुण कुमार
उप महाप्रबंधक(विधि/राजभाषा)
संरक्षक

कामता प्रसाद
सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा)
सलाहकार

कुणाल कुमार गुप्ता
प्रबंधक(राजभाषा)
मुख्य संपादक

के आर लोकेश कुमार शाह
सहायक श्रेणी.I(राजभाषा)
संपादक

कार्यालय पता : महाप्रबंधक(क्षेत्र) का कार्यालय, भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै
सं.8, मेयर सत्यमूर्ति रोड, चेटपेट, चेन्नै - 600031
ई.मेल पता : srmtn.fci@gov.in / mgrhinditn@fci.gov.in

पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएँ लेखकों के अपने विचार हैं। पत्रिका अथवा संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं। केवल आंतरिक वितरण हेतु।

पत्रिका डिज़ाईनिंग & आवरण : लोकेश कुमार शाह के आर, स.श्रे.I(राजभाषा)

अन्नालयम : छठा अंक - अनुक्रमणिका

क्रम सं.	लेखक का नाम	रचना	पृष्ठ सं.
1	संदेश		3-15
2	वी मोती	तमिल नववर्ष (पुथांडु) : परंपरा, आस्था और नई उम्मीदों का उत्सव	18-19
3	के आर लोकेश कुमार शाह	लाचार	19
4	अखिलेश यादव	साहिल	20
5	कुणाल कुमार गुप्ता	हिन्दी हमारी पहचान	21-22
6	ए प्रसांत	युवाओं की शक्ति और राष्ट्र निर्माण	23-24
7	राजदीप चौधरी	मां की यादें	25-26
8	पी श्रीकला	नई सुबह का गीत	27
9	जे पी ईस्थर वैलेंटिना	खाद्य आत्मनिर्भर देश में भूख	28-30
10	नक्षत्रा सथाकर	उठना	30
11	रक्षित्रा सुथाकर	धैय	30
12	अरुणिमा	कार्य का मनोविज्ञान - लक्ष्य से आगे बढते संगठन	31-32
13	वी श्रीदेवी	हरित उर्जा : भारत के सतत विास की दिशा	33-34
14	सुमित कुमार मिश्र	टूटे दायरों के लोग	34
15	के कट्टबोम्मन	समय का मूल्य	35
16	सुकिर्ति कुमारी	भारतीय भाषाएं और संस्कृति : अपनापन का जीवंत सूत्र	36-37
17	सुमित कुमार मिश्र	आशा के बीज	38-41
18	वी चंद्रा नायक	जीवन की दो राहें	42
19	पी कार्तिकेयन	अमेरिका और यूरोपियन यूनियन के सदस्यों जैसे विकसित देशों का कहना है कि अनुदान वैश्विक मार्केट को बिगाडती हैं और तय सीमा से ज्यादा है	43-44
20	शरण्या एस	मिट्टी की महक	45
21	मनीष कुमार यादव	नालंदा विश्वविद्यालय	46-47
22	एस बाक्कियलक्ष्मी	जीवन का गुणवत्ता और इसकी विशेषताएं	48
23	बी नागमल्ली	निडर और समृद्ध : एकल महिलाओं की दैनिक विजय	49-51
24	विक्टर बोस	विश्व भूख और खाद्य अपव्यय : एक ही सिक्के के दो पहलू	52-54
25	पंकज सिंह	भारत की प्रगति में ए.आई. की भूमिका	55-56
26	के जूलियट	महिला दिवस	57-58
27	आर सुब्रमनियन	भारत में बेरोज़गारी : कारण, प्रभाव और समाधान	59-60
28	धाना रुपा एम	ध्यान	61
29	राजभाषा में उत्कृष्ठ कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार		62
30	तमिलनाडु क्षेत्र के अंतर्गत हिंदी दिवस/पखवाडे की झलकियां		63-64
31	गतिविधियां/कलाकृतियां		65-66
32	वार्षिक कार्यक्रम 2025-26		67
33	वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए हिंदी में मूल रूप से टिप्पण एवं आलेखन योजना भाग लेने वाले कार्मिकों की सूची		68-70

वी मोती
प्रबंधक (सामान्य)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

तमिल नव वर्ष (पुथांडु) : परंपरा, आस्था और नई उम्मीदों का उत्सव

"हर नया वर्ष केवल समय का परिवर्तन नहीं, बल्कि नई आशाओं और संभावनाओं की शुरुआत भी होता है।" तमिल संस्कृति में मनाया जाने वाला तमिल नव वर्ष, जिसे पुथांडु कहा जाता है, इसी भावना का प्रतीक है। जिसे प्रत्येक वर्ष 14 अप्रैल को मनाया जाता है। यह दिन तमिल पंचांग के पहले महीने चिथिरई के आरंभ का संकेत देता है और पारंपरिक तमिल नव वर्ष की शुरुआत माना जाता है। भारत, श्रीलंका तथा विश्व के विभिन्न देशों में बसे तमिल समुदाय के लिए यह दिन अत्यंत शुभ और पवित्र होता है।

शुभ शुरुआत की परंपरा – "कनी" दर्शन

तमिल नव वर्ष की सुबह लोग जल्दी उठकर दिन की शुरुआत "कनी" के दर्शन से करते हैं। कनी में फल, फूल, दर्पण, सोना और अन्य शुभ वस्तुओं को सुंदर ढंग से सजाकर रखा जाता है। यह व्यवस्था समृद्धि, सौभाग्य और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक मानी जाती है। मान्यता है कि नए वर्ष के पहले दिन इन शुभ वस्तुओं को देखने से पूरे वर्ष सुख-समृद्धि और मंगल बना रहता है। इसके बाद लोग मंदिर जाकर भगवान के दर्शन करते हैं और परिवार की खुशहाली, स्वास्थ्य तथा समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं।

घरों की सजावट और रंग-बिरंगे "कोलम"

इस दिन घरों को विशेष रूप से सजाया जाता है। घर के प्रवेश द्वार पर रंग-बिरंगे

कोलम (रंगोली) बनाए जाते हैं, जो शुभ और सौंदर्य का प्रतीक होते हैं। यह परंपरा न केवल धार्मिक महत्व रखती है, बल्कि कला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का भी सुंदर उदाहरण है।

स्वादों में छिपा जीवन का संदेश : "मैंगो पचड़ी"

तमिल नव वर्ष के भोजन में कई पारंपरिक व्यंजन बनाए जाते हैं, जिनमें मैंगो पचड़ी का विशेष महत्व है। यह व्यंजन जीवन के छह स्वादों - मीठा, खट्टा, नमकीन, कड़वा, कसैला और तीखा का प्रतीक माना जाता है।

इसका संदेश यह है कि जीवन में सुख-दुःख, सफलता-असफलता और विभिन्न अनुभव मिलकर ही जीवन को पूर्ण बनाते हैं।

परिवार और आशीर्वाद का पर्व

तमिल नव वर्ष केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। इस दिन परिवार के बड़े-बुजुर्ग छोटे सदस्यों को आशीर्वाद देते हैं और उन्हें उपहार या धन देकर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। इस प्रकार यह पर्व पारिवारिक प्रेम, सम्मान और परंपराओं को मजबूत करने का अवसर भी बन जाता है।

नई उम्मीदों के साथ नए वर्ष का स्वागत

तमिल नव वर्ष केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि जीवन में नई शुरुआत का संदेश देने वाला सांस्कृतिक उत्सव है। यह हमें बीते वर्ष के अनुभवों से सीख लेकर आने वाले वर्ष का स्वागत आशा, उत्साह और सकारात्मकता के साथ करने की प्रेरणा देता है।

पुथांडु का यह पावन पर्व हमें याद दिलाता है कि हर नया वर्ष जीवन में नई ऊर्जा, नई संभावनाएँ और नए सपने लेकर आता है।

लाचार

रहने दो दुनिया की बातें
करना क्या है
जब तुम्हारे दिल में है
ख्वाब
ख्वाहिशों की मन शंकुर में
पिसता हुआ चला गया
फिर भी यहां इस दुनिया में रह गया।
फिजूल की बातों से

पेट नहीं भरता
मगर भर जाता है
मन जरूर।
जिस कर्म के लिए आए
उसके लिए लग जाए
प्रीत पा जाए।

लोकेश कुमार शाह के आर
सहायक श्रेणी प्रथम (रा.भा.)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

अखिलेश यादव
सहायक श्रेणी तृतीय (डिपो)
मंडल कार्यालय, चेन्नै

साहिल

यह छोटी लहरों का गुस्सा किनारे पर आके टूटने लगा,
बडी लहरों का गुस्सा भी फूटने लगा,
देती है दिल को चीर, चलाके शब्दों के तीर,
उस किनारे को डुबाने चली है,
उसे उसकी औकात दिखाने चली है।

ढकेल दिया उसको पीछे,
समझ बैठी अपने जूतो के नीचे,
वो भी रुखा किनारा है,
रेत का ढ़ेर जो बेचारी की,
भावनाओं का हथियार है।

बढ़ा कदम सागर की ओर,
बंद कर लहरो का शोर,
थाम बैठा महादेव की डोर,
हर तरफ छाया भोर।

सागर सुन्न बैठा देख रहा तमाशा है,
जीतने की रखी उसने पूरी आशा है,
बेचारा सूर्य पर एक दिन बिताने चला था,
वाह! रे! सगर तू साहिल को डुबाने चला था।

कुणाल कुमार गुप्ता
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

हिंदी हमारी पहचान

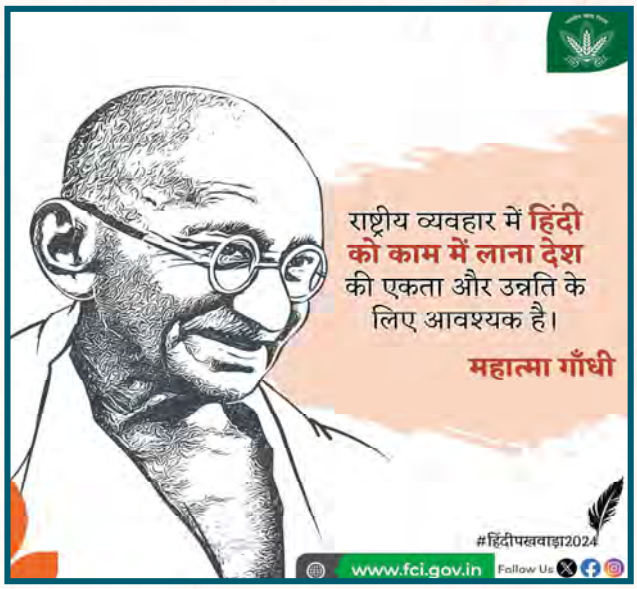

हिंदी विश्व की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है, जो संस्कृत से जन्मी है। हिंदी जन सामान्य और मध्यम वर्ग की सशक्त भाषा है। इस भाषा में अनेक भाषाओं के शब्दों को समाहित किया गया है जिसमें प्रमुख अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत आदि भाषाएँ है, ऐसा मेरा मानना है। हिंदी ने हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत से जोड़े रखा है। हमारे वेद-पुराण, रामायण, महाभारत, संत साहित्य और आधुनिक साहित्य हिंदी के माध्यम से ही जन-जन तक पहुँचे हैं। कबीर, तुलसीदास, प्रेमचंद, निराला जैसे महान साहित्यकारों ने हिंदी को समृद्ध किया और समाज को दिशा दी। हिंदी भाषा ने सदैव मानवता, प्रेम, भाईचारे और नैतिक मूल्यों का संदेश दिया है।

हिंदी की व्यापकता आज केवल भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली भाषा के रूप में उभर रही है। इसके पीछे सांस्कृतिक, आर्थिक, तकनीकी और राजनीतिक आदि कई कारण हैं।

1. वैश्वीकरण और भारत की बढ़ती आर्थिक शक्ति :

भारत आज विश्व की प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। विदेशी कंपनियाँ भारत में निवेश कर रही हैं और भारतीय बाजार तक पहुँच बनाने के लिए हिंदी भाषा को समझना आवश्यक मान रही हैं। व्यापार, ग्राहक सेवा, विपणन (मार्केटिंग) और जनसंपर्क जैसे क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। इसी कारण विदेशी व्यापारी और पेशेवर हिंदी सीख रहे हैं।

2. विदेशों में हिंदी का अध्ययन :

आज अमेरिका, रूस, जापान, जर्मनी, फ्रांस, चीन और आस्ट्रेलिया जैसे देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। कई देशों में हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। विदेशों में बसे भारतीय प्रवासी भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

3. इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफार्म पर हिंदी की लोकप्रियता :

इंटरनेट पर उपयोग की जाने वाली भाषाओं में अंग्रेज़ी और चीनी के बाद हिंदी का स्थान तीसरा माना जाता है। सोशल मीडिया, यूट्यूब, ब्लॉग, समाचार पोर्टल, ओटीटी प्लेटफॉर्म और मोबाइल ऐप्स पर हिंदी कंटेंट की मांग तेजी से बढ़ी है। ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों से नए इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के जुड़ने से हिंदी का डिजिटल विस्तार और भी तेज़ हुआ है।

4. सिनेमा, मीडिया और सांस्कृतिक प्रभाव :

हिंदी सिनेमा (बालीवुड), टीवी धारावाहिक, संगीत और वेब सीरीज़ ने हिंदी को विश्वभर में पहचान दिलाई है। हिंदी फिल्मों और गीतों को विदेशों में भी पसंद किया जाता है। योग, आयुर्वेद, भारतीय त्योहार और संस्कृति के साथ हिंदी भाषा भी वैश्विक मंच पर पहुँची है।

5. राजनयिक और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी :

भारत के प्रधानमंत्री और अन्य नेता अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में भाषण देकर हिंदी को वैश्विक सम्मान दिला रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी के प्रयोग की माँग लगातार बढ़ रही है। कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में अब हिंदी अनुवाद की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

6. रोज़गार और अवसरों की भाषा :

आज कंटेंट राइटिंग, अनुवाद, मीडिया, पत्रकारिता, शिक्षण, सोशल मीडिया प्रबंधन और डिजिटल मार्केटिंग जैसे क्षेत्रों में हिंदी जानने वालों की मांग बढ़ रही है। इससे हिंदी रोज़गार की भाषा के रूप में भी स्थापित हो रही है।

निष्कर्ष : हिंदी आज केवल भावनाओं या साहित्य की भाषा नहीं रही, बल्कि वह ज्ञान, तकनीक, व्यापार और वैश्विक संवाद की सशक्त भाषा बन रही है। बदलते समय के साथ हिंदी ने स्वयं को आधुनिक बनाया है और आने वाले वर्षों में इसका अंतरराष्ट्रीय प्रभाव और भी बढ़ेगा। हिंदी वास्तव में विश्व भाषा बनने की दिशा में अग्रसर है।

अंततः हम कह सकते हैं कि हिंदी हमारी जड़ों से जुड़ी हुई है। इसे अपनाना, संजोना और आगे बढ़ाना हम सभी का कर्तव्य है, क्योंकि हिंदी ही हमारी पहचान है।

ए प्रसांत
प्रबंधक (लेखा)
मंडल कार्यालय, कडलूर

युवाओं की शक्ति और राष्ट्र निर्माण

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके युवाओं पर निर्भर करता है। युवा वर्ग में ऊर्जा, उत्साह, नवीन सोच और परिवर्तन की क्षमता होती है। भारत जैसे युवा आबादी वाले देश में युवाओं की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि युवा सही दिशा में आगे बढ़ें, तो राष्ट्र को विकास के शिखर पर पहुँचा सकते हैं।

युवा केवल आयु का नाम नहीं, बल्कि विचारों की ताज़गी और कर्म की तत्परता का प्रतीक हैं। इतिहास साक्षी है कि जब-जब किसी देश में परिवर्तन आया है, उसमें युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आधुनिक भारत के निर्माण तक, युवाओं ने हर क्षेत्र में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई है।

आज का युवा शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, खेल, कला और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहा है। स्टार्टअप संस्कृति, नवाचार और डिजिटल क्रांति में युवाओं की अग्रणी भूमिका स्पष्ट दिखाई देती है। वे न केवल रोजगार खोजने वाले हैं, बल्कि रोज़गार सृजन करने वाले भी बन रहे हैं, जिससे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है।

हालाँकि युवाओं के सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। बेरोज़गारी, नैतिक मूल्यों का ह्रास, नशे की लत और दिशाहीनता जैसी समस्याएँ युवाओं को कमज़ोर बना सकती हैं। यदि युवा अपनी शक्ति का सही उपयोग न करें, तो वही शक्ति समाज के लिए बाधा भी बन सकती है। इसलिए आवश्यक है कि युवाओं को उचित मार्गदर्शन और सकारात्मक वातावरण मिले।

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है। सामाजिक सुधार, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता अभियान और सामाजिक समानता जैसे क्षेत्रों में भी युवा महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। सेवा, अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना युवाओं को सशक्त नागरिक बनाती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि युवा राष्ट्र की रीढ़ हैं। यदि उन्हें सही शिक्षा, अवसर और दिशा प्रदान की जाए, तो वे देश को आत्मनिर्भर, सशक्त और समृद्ध बना सकते हैं। राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य तभी संभव है जब उसका युवा जागरूक, कर्मठ और नैतिक मूल्यों से युक्त हो।

राजदीप चौधरी
सहायक श्रेणी तृतीय (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, वेल्लोर

माँ की यादें

सूरज अभी-अभी ढलने लगा था, शांत सड़कों पर एक गर्म नारंगी चमक बिखेर रहा था। रोहन अपने लिविंग रूम में बैठा दीवार को घूर रहा था और उसका मन बचपन में खो गया। उसकी माँ को गुज़रे 20 साल हो चुके थे, लेकिन उसके दिल का दर्द अभी भी किसी खुले ज़ख्म जैसा था ।

रोहन तब से बहुत आगे बढ़ चुका था। उसने कड़ी मेहनत की थी, लगन से पढ़ाई की थी, और अपने लिए एक सफल करियर बनाया था। उसका एक खूबसूरत परिवार था, एक प्यारी पत्नी थी और दो बच्चे थे जो उससे बहुत प्यार करते थे। लेकिन इतनी सफलता और खुशियों के बावजूद, रोहन उस खालीपन के एहसास से उबर नहीं पाया जो दो दशकों से उसका पीछा कर रहा था।

उसने सोचा कि काश वह अपनी माँ के लिए उनके जीवित रहते हुए क्या-क्या कर पाता। काश वह उन्हें घुमाने ले जाता, उनके लिए उनकी पसंदीदा चीज़ें खरीदता, और बस उनके साथ ज्यादा समय बिताता। लेकिन ज़िंदगी बहुत बेरहम थी, और माँ उसे बहुत जल्दी छोड़कर चली गई।

रोहन की आँखें भर आईं जब उसने उन छोटी-छोटी बातों के बारे में सोचा जो उसकी माँ उसके लिए करती थीं। वह उसे हर सुबह एक प्यारी सी मुस्कान के साथ जगाती थीं, उसके लिए उसका पसंदीदा नाश्ता बनाती थीं और उसके होमवर्क में मदद

करती थीं। वह उसकी चट्टान, उसकी मार्गदर्शक और उसकी सबसे अच्छी दोस्त थीं।

जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ, रोहन को एहसास हुआ कि उसने अपनी माँ के त्याग को हल्के में लिया था। वह अपने संघर्षों और महत्वाकांक्षाओं में इतना उलझा हुआ था कि उसने माँ द्वारा उसके लिए किए गए छोटे-छोटे कामों की कद्र ही नहीं की और अब, बहुत देर हो चुकी थी।

रोहन सोफ़े से उठा और रसोई में चला गया, जहाँ दीवार पर उसकी माँ की एक फेम लगी तस्वीर टंगी थी। वह उनके मुस्कुराते चेहरे को घूर रहा था, उसमें उदासी और पुरानी यादों का मिला-जुला एहसास था। काश, वह समय को पीछे मोड़ पाता और चीज़ें अलग तरह से कर पाता। काश, वह उन्हें बता पाता कि वह उनसे कितना प्यार करता है और उनकी कितनी कद्र करता है।

लेकिन अब वह बस उन यादों को संजोकर रख सकता था और अपने तरीके से उन्हें गौरवान्वित करने की कोशिश कर सकता था। रोहन ने गहरी साँस ली, अपने आँसू पोंछे और मंद-मंद मुस्कुराया। वह जानता था कि उसकी माँ चाहती हैं कि वह खुश रहे और ज़िंदगी का भरपूर आनंद ले और उसने यही करने की ठान ली थी, भले ही वह उनकी शारीरिक उपस्थिति के बिना ही क्यों न हो।

जैसे-जैसे सूरज क्षितिज के नीचे डूबता गया, रोहन को शांति का एहसास हुआ। उसे पता था कि उसकी माँ का प्यार हमेशा उसके साथ रहेगा, ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव में उसका मार्गदर्शन करेगा। और वह उस समय के लिए आभारी था जो उन्होंने साथ बिताया था, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न रहा हो।

निष्कर्ष :- हमें अपने बुजुर्ग माता-पिता की सेवा करनी चाहिए एवं उनके खुशियों को सर्वोपरि समझना चाहिए और उनके द्वारा किये गये कार्यों का कभी भुलाना नहीं चाहिए।

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

मैथिलीशरण गुप्त

पी श्रीकला
प्रबंधक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर

नई सुबह का गीत

रात चाहे कितनी गहरी हो,
सूरज को उगना ही होता है;
संघर्षों की धूल से उठकर
मनुष्य को चलना ही होता है।

हर पराजय के अँधेरे में
आशा का दीप जलाना है,
टूटे हुए विश्वासों को
फिर से साहस से सजाना है

समय की नदी निरंतर बहती,
रुकना उसका स्वभाव नहीं;
जो साथ कदम बढ़ा लेता है,
उसके लिए कोई अभाव नहीं।

नई सुबह का गीत यही –
विश्वास कभी मत खोना तुम,
अपने भीतर की ज्योति से
हर पथ आलोकित करना तुम।

कल की धूप तुम्हारी होगी,
यदि आज हौसला जागे;
हर सपने को साकार करे
वह श्रम, जो मन में आगे।

जे पी ईस्थर वैलेंटिना
प्रबंधक (गुणवत्ता नियंत्रण)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

खाद्य आत्मनिर्भर देश में भूख

किसी भी देश के लिए खाद्य आत्मनिर्भरता (Food Self & Sufficiency) विकास और सुरक्षा का महत्वपूर्ण संकेत मानी जाती है। भारत जैसे देशों ने कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति करते हुए चावल, गेहूं, दूध और अनाज के उत्पादन में न केवल आत्मनिर्भरता हासिल की है, बल्कि विश्व के प्रमुख निर्यातकों में भी अपनी जगह बनाई है। फिर भी देश में भूख, कुपोषण और पोषण संबंधी असुरक्षा की समस्या बनी हुई है। इसी स्थिति को ''हंगर पैराडाक्स'' (Hunger Paradox) या 'भूख का विरोधाभास' कहा जाता है अर्थात देश पर्याप्त भोजन पैदा करता है, लेकिन वह हर नागरिक की थाली तक नहीं पहुँच पाता।

हंगर पैराडाक्स के प्रमुख पहलू :

1. **अधिशेष उत्पादन बनाम कम खपत :** भारत जैसे देशों ने खाद्यान्न उत्पादन (चावल, गेहूं, दूध और मसाले) में आत्मनिर्भरता हासिल कर ली है और वे शीर्ष निर्यातकों में शामिल हैं। हालांकि, यह पोषण सुरक्षा की गारंटी नहीं देता है, क्योंकि विशेष रूप से ग्रामीण और हाशिए पर रहने वाले समुदायों में पुरानी भूख और कुपोषण की समस्या बनी हुई है।

2. **ग्लोबल हंगर इंडेक्स (GHI) में निम्न रैंकिंग :** खाद्यान्न उत्पादन और निर्यात में अग्रणी होने के बावजूद भारत का प्रदर्शन वैश्विक भूख सूचकांक (Global Hunger Index) में अपेक्षाकृत कमजोर रहा है। (जैसे 2022 में 121 देशों में से 107वें स्थान पर)। यह अल्पपोषण, बच्चों में बौनापन (Stunting) और कमज़ोरी (Wasting) के उच्च स्तर को दर्शाता है, जो देश को 'गंभीर' श्रेणी में रखता है।

3. आर्थिक बाधाएँ और गरीबी : भूख के इस विरोधाभास का सबसे बड़ा कारण आर्थिक असमानता है। समाज का एक बड़ा हिस्सा अभी भी गरीबी के कारण पर्याप्त और पौष्टिक भोजन खरीदने में सक्षम नहीं है। आर्थिक विकास के बावजूद, गरीबी का उच्च स्तर (जहां 10% से अधिक आबादी 2 डालर प्रतिदिन से कम पर जीवित है) पर्याप्त पोषण तक पहुँच को प्रतिबंधित करता है।

4. कैलोरी सुरक्षा बनाम पोषण सुरक्षा : भारत की खाद्य व्यवस्था अक्सर केवल मुख्य अनाजों जैसे चावल और गेहूं की उपलब्धता पर केंद्रित रहती है। इससे कैलोरी की जरूरत तो पूरी हो सकती है, लेकिन संतुलित पोषण नहीं मिल पाता। परिणामस्वरूप एनीमिया, सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी और कुपोषण जैसी समस्याएँ बनी रहती हैं।

5. अपव्यय और वितरण की अक्षमताएँ : भंडारण, परिवहन और कोल्ड-चेन अवसंरचना की कमी के कारण बड़ी मात्रा में भोजन बर्बाद हो जाता है। यह भोजन जरूरतमंद लोगों तक पहुँचने से पहले ही नष्ट हो जाता है, जिससे खाद्य असमानता और बढ़ती है।

6. कोविड-19 से उजागर हुई कमजोरियाँ : कोविड-19 महामारी के दौरान आर्थिक गतिविधियों में आई गिरावट ने खाद्य वितरण व्यवस्था की सीमाओं को उजागर किया। इस स्थिति से निपटने के लिए सरकार को 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना' (PMGKAY) जैसे बड़े पैमाने के कार्यक्रम चलाने पड़े, ताकि गरीब तबकों तक मुफ्त खाद्यान्न पहुँचाया जा सके।

समाधान और आवश्यक परिवर्तन :

हंगर पैराडाक्स से निपटने के लिए नीति-निर्माताओं को केवल **"खाद्य सुरक्षा"** (पर्याप्त उत्पादन) से आगे बढ़कर "पोषण सुरक्षा - (संतुलित और पौष्टिक भोजन की उपलब्धता) पर ध्यान देना होगा। इसके लिए कुछ प्रमुख कदम आवश्यक हैं :

1. कृषि उत्पादन में विविधता : केवल चावल और गेहूं पर निर्भरता कम करते हुए मोटे अनाज (बाजरा, रागी), दालों, फलों और सब्जियों के उत्पादन को प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे पोषण स्तर में सुधार होगा और कृषि भी अधिक टिकाऊ बनेगी।

2. सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सुदृढ़ बनाना : राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) और सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) को अधिक पारदर्शी, प्रभावी और तकनीक-आधारित बनाना आवश्यक है, ताकि खाद्यान्न सही समय पर और सही लोगों तक पहुँच सके।

3. आर्थिक असमानताओं को कम करना : ग्रामीण रोजगार, कृषि आय और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को मजबूत कर गरीब वर्गों की आय बढ़ानी होगी। इससे उनकी क्रय शक्ति बढ़ेगी और वे पौष्टिक भोजन खरीदने में सक्षम होंगे।

4. पोषण सुरक्षा जाल को मजबूत करना : बच्चों, गर्भवती महिलाओं और कमज़ोर वर्गों के लिए लक्षित पोषण कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू करना जरूरी है, ताकि बौनापन, कमजोरी और कुपोषण की समस्या को कम किया जा सके।

निष्कर्ष

"हंगर पैराडाक्स" यह स्पष्ट करता है कि केवल अधिक भोजन पैदा करना ही पर्याप्त नहीं है। असली चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि हर नागरिक को सुलभ, पर्याप्त और पौष्टिक भोजन मिले। जब तक उत्पादन, वितरण, आर्थिक समानता और पोषण जागरूकता के बीच संतुलन स्थापित नहीं होगा, तब तक खाद्य आत्मनिर्भरता के बावजूद भूख की समस्या बनी रह सकती है। इसलिए भारत की विकास यात्रा में खाद्य सुरक्षा से आगे बढ़कर पोषण सुरक्षा को प्राथमिकता देना समय की मांग है।

उठना

अपने विचारों में अक्षर बन जाओ,
और तुम उत्थान पाओगे! अपने विचारों में कैद हो जाओ,
और तुम सर्वश्रेष्ठ बनोगे!
अपने तुम प्रथम बनोगे! अपने परिश्रम में पक्षी बन जाओ,
और तुम सर्वोच्च बनोगे!
अपने आत्मविवास में विराजमान हो जाओ,
और तुम स्वर्ण बनोगे!

नक्षत्रा सूयाकर
सुपुत्री पि ए सुबयिनम
सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)
मंडल कार्यालय, कडलूर

धैर्य

मोक्ष एक दिन की तपस्या में प्राप्त नहीं होता।
एक मूर्ति एक ही बार में नहीं बनती।
पूर्णिमा एक ही रात में अस्त नहीं होती।
मधुको। एक ही बूंद से नहीं बनता।
इसलिए, हे मनुष्य!
यह सोचकर निरा मत हो कि एक दिन के परिश्रम से तुम उंचाइयों तक नहीं पहुंच पाए!
अपने प्रयासों के रथ को निरंतर चलाते रहो! कष्टों को पार करने के बाद निश्चर तुम्हारे ही होंगे!

रक्षित्रा सूयाकर
सुपुत्री पि ए सुबयिनम
सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)
मंडल कार्यालय, कडलूर

अरूणिमा
सुपुत्री अरूण कुमार
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

कार्य का मनोविज्ञान - लक्ष्य से आगे बढ़ते संगठन

हर संगठन अपनी सफलता को आँकड़ों में मापता है, पूरे हुए लक्ष्य, समय पर पूरा काम और बढ़ता मुनाफ़ा। लेकिन इन सबके पीछे एक और गहरी ताकत काम करती है, जो तय करती है कि संगठन सिर्फ टिकेगा या सच में आगे बढ़ेगा और वह है मानव मनोविज्ञान।

संगठनात्मक मनोविज्ञान

इस बुनियादी तत्व को समझने का प्रयास है जो हर कार्यस्थल की धड़कन में बसता है, यह जानना कि लोग काम के दौरान कैसे सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं और कैसे व्यवहार करते हैं। यही बातें तय करती हैं कि किसी संगठन की उत्पादकता, नेतृत्व और कार्य संस्कृति कैसी होगी। रणनीतियाँ और प्रणालियाँ जितनी भी सुदृढ़ हों, अंततः उन्हें जीवंतता देने का कार्य मनुष्य ही करता है।

कार्यस्थल पर मन की भूमिका

कर्मचारी मशीन नहीं होते जिन्हें केवल ''ऑन'' या ''ऑफ'' किया जा सके। उनकी प्रेरणा समय के साथ बदलती है, मनोबल उठता-गिरता है और उनकी कार्यक्षमता

उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रतिबिंब बन जाती है। जब कर्मचारी खुद को सम्मानित और मानसिक रूप से सुरक्षित महसूस करते हैं, तो उनका काम करने का उत्साह और दक्षता स्वाभाविक रूप से बढ़ जाते हैं। स्वस्थ कार्य वातावरण तनाव को खत्म नहीं करता, बल्कि उसे तरीके से संभालना सिखाता है।

नेतृत्व : भावना और बुद्धिमत्ता का संगम

आज का प्रभावी नेतृत्व आदेश देने से अधिक, भावनात्मक बुद्धिमत्ता दिखाने में निहित है। एक सच्चा नेता वह होता है जो अपनी टीम के तनाव, भिन्नताओं और सामूहिक मनोभावों को समझ सके। उसकी संवेदनशीलता ही विश्वास और प्रतिबद्धता का पुल बन जाती है। स्पष्ट संवाद, रचनात्मक प्रतिक्रिया और समयानुकूल प्रोत्साहन ये छोटे-छोटे कदम कर्मचारियों में उद्देश्य और जुड़ाव की भावना को गहराई देते हैं।

संगठन की संस्कृति : असली पहचान

किसी संगठन की संस्कृति उसकी नीतियों से नहीं, बल्कि उसके रोज़मर्रा के व्यवहार में दिखाई देती है गलतियों को कैसे लिया जाता है, विचारों को कितना महत्व मिलता है और सफलता को कैसे साझा किया जाता है। यही संस्कृति की सच्ची परिभाषा है। सकारात्मक संस्कृति रचनात्मकता, सहयोग और लचीलापन को अंकुरित करती है, जबकि नकारात्मक संस्कृति नवाचार की जड़ों को भीतर ही भीतर सुखा देती है।

सुख-समृद्धि : अब यह विकल्प नहीं, आवश्यकता है :

आज मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य केवल सुविधा नहीं, बल्कि संगठन की स्थायी सफलता की शर्त है। कार्यस्थल पर थकान, उदासीनता और कर्मचारी पलायन अक्सर अधूरी मनोवैज्ञानिक ज़रूरतों का परिणाम होते हैं, जो संगठन कर्मचारियों की भलाई को प्राथमिकता देते हैं, सहयोगी नीतियों, संतुलित अपेक्षाओं और जीवन-कार्य के सामंजस्य के माध्यम से वे न केवल लोगों को जोड़े रखते हैं, बल्कि उनकी निष्ठा भी जीत लेते हैं।

भविष्य की दिशा : तेज़ी से बदलते पेशेवर दौर में वही संगठन आगे बढ़ेंगे जो इस सत्य को स्वीकार करेंगे, उत्पादकता वहीं पनपती है, जहाँ मनुष्यों को बढ़ने का अवसर मिलता है। संगठनात्मक मनोविज्ञान में निवेश केवल भावनात्मक पहलू नहीं, बल्कि ठोस परिणामों का आधार है। जब संगठन अपने लोगों के मन को समझते हैं, उनका सम्मान करते हैं और उन्हें प्रेरित करते हैं, तो परिणाम स्वयं उनके पक्ष में खड़े हो जाते हैं।

राष्ट्र एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।

बालकृष्ण शर्मा नवीन

वी श्री देवी
सहायक श्रेणी द्वितीय (सामान्य)
मंडल कार्यालय, कडलूर

हरित ऊर्जा : भारत के सतत विकास की दिशा

भारत एक ऐसा देश है जहाँ परंपरा और प्रगति साथ-साथ चलती हैं। बदलते समय के साथ देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती है विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखना। इसी चुनौती का समाधान बनकर उभरी है हरित ऊर्जा, जो न केवल ऊर्जा की आवश्यकता को पूरा करती है, बल्कि प्रकृति की रक्षा भी करती है।

कहानी शुरू होती है एक छोटे से गाँव ''सूर्यपुर'' से। यह गाँव कभी बिजली की कमी से जूझता था। रात होते ही पूरा गाँव अंधेरे में डूब जाता, बच्चे लालटेन की रोशनी में पढ़ते और किसान डीज़ल पंप के खर्च से परेशान रहते। लेकिन एक दिन गाँव में एक युवा अभियंता आरव, आया। वह शहर में पढ़-लिखकर लौटा था और हरित ऊर्जा के महत्व को समझ चुका था। उसने गाँव वालों को सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और बायोगैस के बारे में सरल भाषा में समझाया।

शुरुआत में लोगों को संदेह था। उन्हें डर था कि यह सब महँगा होगा और काम नहीं करेगा। पर आरव ने धैर्य से समझाया कि सूर्य की रोशनी और हवा मुफ्त संसाधन हैं, जो कभी खत्म नहीं होंगे। धीरे-धीरे गाँव के स्कूल की छत पर सोलर पैनल लगाए

गए। कुछ ही दिनों में स्कूल रोशनी से जगमगा उठा। बच्चों की पढ़ाई आसान हो गई और शिक्षकों का उत्साह बढ़ गया।

इसके बाद किसानों ने सौर पंप अपनाए। अब उन्हें न तो डीज़ल की चिंता थी और न ही प्रदूषण की। खेतों की सिंचाई समय पर होने लगी और फसल उत्पादन बढ़ गया। गाँव में गोबर से बायोगैस संयंत्र भी लगाया गया, जिससे खाना पकाने के लिए स्वच्छ ईंधन मिलने लगा। महिलाओं को धुएँ से राहत मिली और उनका स्वास्थ्य बेहतर हुआ।

सूर्यपुर की यह कहानी पूरे भारत की तस्वीर बन सकती है। हरित ऊर्जा भारत को ऊर्जा आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम है। इससे न केवल कार्बन उत्सर्जन कम होता है, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी पैदा होते हैं। सौर पैनल निर्माण, पवन चक्कियों की स्थापना और रखरखाव जैसे क्षेत्रों में युवाओं को काम मिलता है।

हरित ऊर्जा का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए धरती को सुरक्षित रखती है। जब विकास प्रकृति के साथ तालमेल में होता है, तभी वह टिकाऊ कहलाता है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के लिए यह मार्ग अत्यंत आवश्यक है।

कहानी के अंत में सूर्यपुर पूरी तरह रोशन था। सिर्फ बिजली से नहीं, बल्कि उम्मीद से। यह उम्मीद कि अगर सही दिशा और सोच हो, तो हरित ऊर्जा भारत को सतत विकास के पथ पर आगे ले जा सकती है। यही संदेश है – प्रकृति के साथ चलकर ही सच्ची प्रगति संभव है।

टूटे दायरों के लोग

अपने अपने दायरों में सिमटे हुए लोग
अपनी ही यादों में खोए हुए लोग

कितनी ही बातों कितनी ही यादों के पार
कुछ बातों कुछ यादों को दोहराते हुए लोग

अक्सर अपना ही अक्स दूसरों में ढूँढ़ते
और बस ना मिलने पर पछताते हुए लोग

खामोशी में शोर और शोर में खामोशी
को ढूँढ़ते इधर उधर टकराते हुए लोग

हर इंसान के हालातों पर बतियाते हुए लोग
फिर अपने हालात पर खिसियाते हुए लोग

भीड़ में खुद को खोने से बचाते हुए लोग
उसी भीड़ में खोए हुए लोगों को
ढूँढ़ते हुए लोग

सुबह से शाम और शाम से रात
रातों को सुबह में जगाते हुए लोग

सुमित कुमार मिश्र
सहायक श्रेणी प्रथम (तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

के कट्टबोम्मन
सहायक श्रेणी तृतीय (सामान्य)
मंडल कार्यालय, तंजावुर

समय का मूल्य

समय जीवन की सबसे मूल्यवान वस्तु है। हम जानते हैं कि हमारा जीवन समय का एक बंडल मात्र है जो वर्षों, महीनों, हफ्तों और दिनों में विभाजित है, इसलिए हर दिन जीवन का महत्वपूर्ण बिंदु है। अतः सुखी और उत्पादक जीवन के लिए समय का सदुपयोग करना बहुत आवश्यक है। एक बार समय बीत जाने पर वह कभी वापस नहीं आता। यह निरंतर चलता रहता है। इसका न कोई आरंभ है, न कोई अंत। इसे न तो बनाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है। खर्च किया गया पैसा फिर से कमाया जा सकता है, लेकिन समय नहीं। आता है और चला जाता है।

इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम हमेशा समय का सदुपयोग करें। हमें समय को कभी भी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए और उसे किसी उत्पादक कार्य में लगाना चाहिए। जो समय का महत्व समझता है, वह उसका सही उपयोग करता है। वह अपने जीवन में सफल होगा। उसके पास अपने परिवार और मित्रों के लिए भी समय होगा। समय का सदुपयोग करना ही समय का मूल्य है। यदि हमने अपना समय खो दिया, तो हमने सब कुछ खो दिया।

इसलिए हम समाज में देखते हैं कि कई सफल लोग पैसे से ज्यादा समय को महत्व देते हैं। समय ही हमें धन, समृद्धि और खुशी देता है, लेकिन इस दुनिया में कोई भी चीज समय नहीं दे सकती।

इसलिए हमें काम, सामाजिक जीवन और नींद के लिए समय का सही प्रबंधन करना होगा। समय का उचित समायोजन आवश्यक है। इससे व्यक्ति को अपने सभी कार्यों को पूरा करने में मदद मिलेगी।

सुकिर्ति कुमारी
सहायक श्रेणी तृतीय (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, कोयंबतूर

भारतीय भाषाएँ और संस्कृति : अपनापन का जीवंत सूत्र

जब मैं भारत के मानचित्र को देखती हूँ, तो मुझे केवल राज्यों की सीमाएँ नहीं दिखतीं मुझे विविध भाषाओं का एक जीवंत आँगन दिखाई देता है। हर भाषा मेरे लिए उस घर की तरह है, जहाँ अलग-अलग कमरों में भिन्न-भिन्न बोलियाँ, लय और परंपराएँ साँस लेती हैं। एक स्त्री और लेखिका के रूप में मैं भाषा को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि अपनत्व की धड़कन मानती हूँ।

भारतीय संविधान ने जिस प्रकार भाषायी विविधता को सम्मान दिया है, वह मेरे लिए गर्व का विषय है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सभी भाषाएँ इस देश की सांस्कृतिक बहुलता का प्रतीक हैं। हिंदी, तमिल, बांग्ला, मलयालम, उड़िया, पंजाबी ये सभी भाषाएँ अपनी-अपनी स्मृतियों, लोक कथाओं और जीवन-दृष्टि को संजोए हुए हैं।

अनुभवों में भाषा अक्सर घर की पहली ध्वनि होती है। माँ की लोरी, दादी की कहानी, आँगन में गूँजती लोकधुन। मातृभाषा में व्यक्त भावनाएँ अधिक सच्ची और सहज प्रतीत होती हैं। जब कोई अपनी भाषा में मुस्कुराता या रोता है, तो उसके भाव सीधे हृदय तक पहुँचते हैं।

मैंने देखा है कि साहित्य में भाषा संस्कृति का दर्पण बन जाती है। महादेवी वर्मा की संवेदनशील कविता हो या अमृता प्रीतम की आत्मस्वर से भरी रचनाएँ – इन लेखिकाओं ने अपनी-अपनी भाषाओं के माध्यम से स्त्री-अनुभव और समाज की गहराइयों को उजागर किया। वहीं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की बांग्ला रचनाएँ यह बताती हैं कि भाषा सीमाओं को लाँघकर भी आत्मीय बनी रह सकती है।

मेरे लिए भारतीय भाषाएँ केवल परंपरा नहीं, बल्कि परिवर्तन की शक्ति भी हैं। गाँव की बोली से लेकर शहर की आधुनिक भाषा तक, हर रूप में एक जीवंतता है। आज डिजिटल माध्यमों पर क्षेत्रीय भाषाओं का विस्तार देखकर मुझे आशा होती है कि हमारी भाषाएँ समय के साथ चलना जानती हैं।

मैं मानती हूँ कि भाषा का अपनापन समाज में सह-अस्तित्व की भावना को सुदृढ़ करता है। जब हम किसी की भाषा का सम्मान करते हैं, तो हम उसके अस्तित्व का सम्मान करते हैं। यह सम्मान ही सामाजिक समरसता की नींव है।

एक लेखिका के रूप में, मेरा विश्वास है कि भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक आत्मा हैं। वे हमें हमारी जड़ों से जोड़ती हैं और पंख भी देती हैं। विविधता में एकता का जो स्वप्न हम देखते हैं, वह भाषाओं के माध्यम से ही साकार होता है।

अंततः, मैं यही कहूँगी कि भारतीय भाषाओं का अपनापन मेरे लिए व्यक्तिगत भी है और सामाजिक भी। यह मेरे लेखन की प्रेरणा है, मेरी पहचान का आधार है और उस भारत का स्वर है जो अनेक होते हुए भी एक है।

हम हिंदी के प्रति अपने दायित्वों को नहीं निभा रहे हैं। हिंदी बोलते समय भी अंग्रेजी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग हिंदी को कहां लो जाएगा, चिंता का विषय है। हम हिंदी को अपनायें, इसे छोटे-छोटे व्यवहार में लाएं तभी इसका विकास होगा।

यशपाल, साहित्यकार

*****

सरकारी अधिकारी जब तक हिंदी में सोचना शुरू नहीं करेंगे तब तक हिंदी के प्रयोग में गति नहीं आएगी।

यशवंत सिन्हा, पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री

सुमित कुमार मिश्र
सहायक श्रेणी प्रथम (तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

आशा के बीज

महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव की बेरंग मिट्टी पर जहाँ बारिश कम ही होती थी, वहीं शंकर नाम का एक गरीब किसान अपने परिवार के साथ रहता था। उसकी ज़िंदगी का हर दिन एक नई चुनौती लेकर आता। शंकर की ज़िंदगी में **"चुनौती"** केवल एक शब्द नहीं, बल्कि रोज़मर्रा की जद्दोजहद का दूसरा नाम था। उसके सामने सबसे बड़ी चुनौती थी सूखा और अनिश्चित मौसम। बारिश के कम होने से उसकी फसल बार-बार खराब हो जाती थी, जिससे घर की आमदनी और अनाज दोनों ही कम हो गए। बार-बार फसल खराब होने के कारण उस पर कर्ज चढ़ गया था, जिसे चुकाने का कोई रास्ता नहीं दिखता था। घर खर्च चलाना, बच्चों की पढ़ाई के पैसे जुटाना और बीमार पत्नी उमा के इलाज के लिए दवा लाना उसके लिए बहुत कठिन हो गया था। गाँव में कभी-कभार मजदूरी भी मिल जाती, पर वह भी अपर्याप्त थी। इन सबके बीच शंकर की सबसे बड़ी चुनौती थी आशा और विश्वास बनाए रखना। विपरीत परिस्थितियाँ, हर मोड़ पर उसकी हिम्मत तोड़ती थीं, लेकिन वह अपने बच्चों की मासूम मुस्कान, धार्मिक ग्रंथों की सीख और अपनी मेहनत में प्रेरणा पाता रहा। आर्थिक तंगी, पारिवारिक मुश्किलें, सामाजिक उपेक्षा और प्राकृतिक विपदाएँ हर दिन, हर मोड़ पर शंकर के सामने कोई न कोई चुनौती खड़ी करती रहती थी, जिसका वह साहस और उम्मीद के साथ सामना करता था।

शंकर की पत्नी उमा कुछ समय से गंभीर रूप से बीमार थी। उसकी तबियत दिन-प्रतिदिन खराब होती जा रही थी, शरीर पर बीमारी का बोझ बढ़ता जा रहा था

और चलने-फिरने में भी उसे बड़ी मुश्किलें होने लगी थीं। पहले वह पूरी तरह से घर की देखरेख किया करती थी, बच्चों की चिंता और घर के काम-काज में जुटी रहती थी किन्तु अब स्थिति बदल गई थी और उमा को चलने फिरने में भी परेशानी का सामना करना पड़ता था। शारीरिक दुर्बलता के साथ-साथ उसका मन भी अक्सर उदास रहता था।

उमा की बीमारी ने शंकर के जीवन में एक गहरा खालीपन भर दिया था। पहले वह अपनी पत्नी की हँसी, उसका साथ, उसकी देखभाल में छुपी आत्मीयता का आदी था। अब, उमा के चेहरे पर बढ़ती पीड़ा, उसकी कमजोर होती काया, और उसकी आँखों में उतरती उदासी शंकर को भीतर तक झकझोर देती थी। कई बार शंकर अकेले में बैठकर सोचता कि कैसे समय ने उसकी गृहस्थी की खुशियों को धीरे-धीरे छीन लिया है। पर परिवार की जरूरतें, घर खर्च, बच्चों की देखभाल ये सब उसकी जिम्मेदारियाँ थीं, जिनसे वह मुँह नहीं मोड़ सकता था। उमा की तबीयत बिगड़ने के साथ-साथ उसे खाना बनाना, बच्चों को तैयार करना, घर का कामकाज और खेत की मेहनत सब खुद ही संभालना पड़ रहा था। ऐसे में उसकी थकावट शरीर तक नहीं, सीधे आत्मा तक पहुँच जाती थी।

लेकिन इसी गहराते अंधेरे में उसके बच्चों रवि और सीता की मासूम उप. स्थिति उसकी सबसे बड़ी ताकत थी। बच्चों के छोटे-छोटे कदमों की आहट, कभी-कभी अचानक खिलखिला उठना, उनकी भोली बातचीत शंकर के लिए उम्मीद और ताजगी की तरह थीं। उनके खिलखिलाने की आवाज़ें पूरे घर में गूंजतीं, और कुछ देर के लिए जैसे उमा की बीमारी का दुख, घर की तंगी, खेत की चिंता सब कहीं दूर हो जाते। बच्चों की तोतली जुबान में कही गई बातें और नन्हें हाथों से किया गया कोई छोटा-सा काम भी शंकर के हृदय को राहत का स्पर्श दे जाता।

शंकर को कई बार लगता कि अगर बच्चे न होते, तो वह इन परेशानियों के बीच खुद को सम्भाल ही न पाता। उनके साथ खेलना, बैठकर बातें करना, पढ़ाना इन सब में उसे अपने पुराने, खुशहाल दिनों की झलक मिलती। उनकी मुस्कान उसकी थकान को मिटा देती, और वह खुद को फिर से उत्साहित और मजबूत महसूस करता। बच्चों की छोटी-छोटी खुशियों में ही शंकर को अपनी मेहनत, संघर्ष और जिम्मेदारियों का मतलब मिलता।

दरअसल, बच्चे उस घर में फैले हुए अंधकार में एक उम्मीद की किरण जैसे थे। जहाँ उमा की बीमारी का अंधेरा हर ओर फैला था, वहीं बच्चों की मासूम उपस्थिति उस अंधेरे को बार-बार छांटती रहती थी। वे ही शंकर को याद दिलाते कि अभी भी

जीवन में उम्मीद बाकी है, कठिनाइयों के बादल चाहे जितने घने हों, उम्मीद की किरणें उनके बीच से रास्ता खोज ही लेती हैं।

हर शाम जब शंकर थका-हारा घर लौटता, और बच्चे दौड़कर उससे लिपट जाते, तो एक पल के लिए उसे लगता कि उसकी सारी परेशानियाँ कहीं खो गईं हैं। बच्चों की मुस्कान में ही उसे फिर से आगे बढ़ने का साहस मिल जाता था। मुश्किलें चाहे कितनी भी बड़ी रही हों, बच्चों की हँसी उसे बार-बार यही विश्वास दिलाती थी कि जीवन में चाहे जितनी कठिनाईयां आएँ, उन्हें पार किया जा सकता है, बशर्ते दिल में प्यार, आशा और आगे बढ़ने का विश्वास जिंदा रहे।

इस प्रकार, उमा की बीमारी के कठिन समय में भी बच्चों की मासूम खुशी और उपस्थिति, शंकर के लिए जीवन जीने की असली वजह बन गई थी। वे ठीक उसी तरह थे जैसे सूखी जमीन पर अचानक बरस गई बारिश की मीठी फुहार जो जीवन में नई ताजगी और उम्मीद भर देती है।

शंकर की ज़िंदगी कठिनाइयों से भरी थी। कृषि की विफलता, पत्नी की बीमारी, बच्चों की जरूरतें और हर वक्त पैसे की तंगी। परिवार में दुखों का साया हर ओर था, पर ऐसे समय में उसके बच्चों की मासूमियत उनकी नन्हीं-नन्हीं बातें, अचानक उमड़ पड़ने वाली हँसी, उनके भोले सवाल और छोटी-छोटी खुशियाँ शंकर के लिए ढाल बन जाती थीं। बच्चों के चहरे पर आती सच्ची मुस्कान, घर के सूनेपन और चिंता की घबराहट को दूर कर देती थी। उनके साथ खेलते, हँसते, छोटी-छोटी बातें साझा करते हुए शंकर को एक नई ऊर्जा और सुकून मिलता। सब संकटों के बावजूद, बच्चों की खुशी ने उसके अंदर जीने का हौसला जगाए रखा। बच्चों ने उसे हमेशा यह जतलाया कि उम्मीद कभी नहीं छोड़नी चाहिए, चाहे हालात कितने भी मुश्किल क्यों न हों।

रात के समय, जब गाँव में पग-पग पर सन्नाटा फैल जाता और सभी लोग अपने-अपने घरों में दुबक जाते, शंकर एक कोने में जाकर गीता की पंक्तियों में डूब जाता। गीता की पंक्तियों में उसे सच्ची ताकत मिलती थी। वह उन वचनों को पढ़ता **"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"** और उनके मर्म को मन ही मन दोहराता। उसके लिए गीता एक किताब नहीं, केवल कथा नहीं, जीवन-निर्देशिका थीं जैसे कोई करीबी दोस्त हो जो अंधेरे में रास्ता दिखा देता है। गीता में उद्धत पंक्तियाँ उसे बार-बार याद दिलाती थीं कि मेहनत करना ही असली धर्म है, फल की चिंता न करना ही सही रास्ता है।

नए दिन का आरंभ होते ही शंकर मेहनत के लिए खेत की ओर निकल पड़ता। सूखी, कठोर ज़मीन में हल चलाते समय उसे मिट्टी की खुशबू अपना बना लेती थी।

हल की पकड़ से बनी उनकी हथेलियों की सख्ती, पसीने की गंध और पूरे शरीर की थकान ये सब उसके संघर्ष के हिस्से थे। वह जानता था। यह पसीना ही उसकी उम्मीद और परिवार की आस है। शाम को घर आते वक्त उसके चेहरे पर भले ही थकान होती, लेकिन बच्चों की मौजूदगी उसकी सारी थकावट को दूर कर देती थी।

शाम को शंकर बच्चों और पत्नी के साथ बैठता, रामायण और दूसरी कहानियाँ सुनाता, सीता की सहनशीलता, श्रीराम की दृढ़ता की बातें करता, जिससे न केवल बच्चे बल्कि वह खुद भी जीवन के संघर्ष में प्रेरणा पाता। इन कहानियों के माध्यम से वह समझाता कि जीवन की विपत्तियाँ स्थायी नहीं होतीं, हिम्मत और विश्वास से उन्हें पार किया जा सकता है। प्रायः हालात इतने बिगड़ जाते कि वह निराश होने लगता कभी फसल बर्बाद, कभी बीमारी बढ़ जाती, कभी कर्ज का बोझ और बच्चों की शिक्षा का संकट सताने लगता। पर जैसे ही वह अपने बच्चों के छोटे-छोटे हाथों को पकड़ता, उनकी आंखों में उम्मीद देखता, उनकी मासूमियत से भरी आवाज़ सुनता बाबा, हिम्मत मत हारो, कृष्ण ने कहा है कि संकट भी तितली बन जाता है उसका मन फिर से मजबूत हो जाता। बच्चों की ये बातें, जो उन्होंने अपने बाबा शंकर से ही सुन रखीं थीं, उसी के जीवन में नई चेतना भर देतीं।

धीरे-धीरे शंकर ने अपने जीवन में ठहरेपन को तोड़ने की ठानी। वह गाँव की पंचायत में गया, सरकारी योजनाओं और नई कृषि तकनीकों के बारे में जाना। शुरू में शंका और डर था कि लोगों के ताने, हँसी, उपहास लेकिन उसने हार नहीं मानी। गांव के तानों के बावजूद, अपने भीतर अर्जुन की तरह उसने नया रास्ता पकड़ा। उसे लगने लगा कि मेहनत के साथ नई सोच और बदलाव में ही भविष्य की उम्मीद छिपी है।

समय के साथ उसकी मेहनत रंग लाई। कुछ बीज उगे, खेतों में हरियाली लौटी, परिस्थितियां सुधरने लगीं। उमा की तबीयत में भी सुधार आया और बच्चे स्कूल जाकर पढ़ाई कर सके। अब घर में फिर से हँसी और खुशहाली लौटने लगी थीं और जब दीपावली की रात, पूरे गाँव में दीयों की जगमगाहट फैल रही थी, शंकर के मन में ये बात गहराई से बैठ गई कि असली उजाला न घर के दीयों से आता है, न धन-संपत्ति से बल्कि हौसले, प्यार और उम्मीद से। संघर्ष, प्रयत्न और भरोसे का उजास ही जीवन को रौशन करता है।

इस तरह, बच्चों की मासूमियत और परिवार के प्रति प्रेम ने शंकर को हर दिन संघर्ष करने की प्रेरणा दी। धार्मिक ग्रंथों से मिली सीख और अपने परिवार की खुशी से ही उसे ताकत मिलती कि वह कभी हार न माने, और हर नए दिन को उम्मीद और साहस के साथ जी सके।

वी चंद्रा नायक
प्रबंधक (सामान्य)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

जीवन की दो राहें

जीवन की दौड़, ऑफिस की भाग,
हर दिन एक जंग, हर पल है आग।
टिफिन में लंच, डेस्क पर काम,
बॉस की डांट, नहीं कोई आराम।
मीटिंग, डेडलाइन, प्रोजेक्ट की चिंता,
नहीं समय, नहीं है कोई फुर्सत।
फाइलों का बोझ, कंप्यूटर की स्क्रीन,
जीवन की रफ्तार, नहीं है कोई ब्रेक।
पर अब आया है ये दिन, कल था जो दूर,
आज से नहीं है ऑफिस, बस एक अधूरा शोर।
नहीं बजेगी अब अलार्म की रिंग,
सुबह की नींद अब है अनमोल चीज़।
अब है समय, अपने लिए जीने का,
रिटायरमेंट की घंटी, जीवन को बदलने का।
बच्चों के साथ, समय अब है पास,
जीवन की शाम अब है खास।
अब आएंगे दोस्त, बातें होंगी पुरानी,
जीवन की कहानी, अनकही और सुहानी।

अब है समय, सपने देखने का,
जीवन की शाम अपने रंग में रहने का।
अब आया है ये दिन, कल था जो दूर,
आज से नहीं है अहफिस, बस एक अधूरा शोर।
नहीं बजेगी अब अलार्म की रिंग,
सुबह की नींद अब है अनमोल चीज़।
नहीं चलेगी अब पेन, नहीं दिखेगी फाइल,
बैठेंगे घर में, चाय की चुस्कियों के साथ।
बच्चों के साथ, समय अब है पास,
जीवन की शाम अब है खास।
नहीं होगी अब मीटिंग, नहीं होगा प्रेजेंटेशन,
नहीं होगी अब बहस की डांट, नहीं होगा टेंशन।
अब है समय, अपने लिए जीने का,
रिटायरमेंट की घंटी, जीवन को बदलने का।

पी कार्तिकेयन
सहायक श्रेणी प्रथम (डिपो)
मंडल कार्यालय, तूतीकोरिन

अमेरिका और यूरोपियन यूनियन के सदस्यों जैसे विकसित देशों का कहना है कि ये अनुदान वैश्विक मार्केट को बिगाड़ती हैं और तय सीमा से ज्यादा हैं।

विकसित देश खुद भी अलग-अलग रूपों में भारी कृषि अनुदान देते हैं। EU की सामान्य कृषि पालिसी (CAP) और US फार्म सहायता योजना में डायरेक्ट आय सहायता, बीमा अनुदान और एक्सपोर्ट इंसेंटिव शामिल हैं जो कुल मिलाकर भारत के अनुदान स्तर से कहीं ज्यादा हैं। इसके अलावा, WTO अनुदान आंकन 1980 के दशक के पुराने रेफरेंस प्राइस पर आधारित हैं, जिससे भारत की सब्सिडी आर्टिफिशियली बढ़ी हुई लगती है। भारत ने बार-बार इन नियमों में सुधार की मांग की है, यह तर्क देते हुए कि ये विकासशील देशों के साथ गलत हैं।

भारत द्वारा कृषि अनुदान जारी रखने का औचित्य

भारत का कृषि अनुदान जारी रखने का फैसला कई कारणों से सही है। सबसे पहले, खाद्य सुरक्षा एक संप्रभु प्राथमिकता है। बड़ी आबादी अभी भी भूख और कुपोषण की चपेट में है, इसलिए सब्सिडी कम करने के खतरनाक नतीजे हो सकते हैं। अनुदान वाली खरीद और वितरण यह तय करता है कि बुनियादि भोजन सस्ता और आसानी से मिल सके। दूसरा, किसानों की भलाई और गांवों में रोज़ी-रोटी सामाजिक स्थिरता के लिए बहुत ज़रूरी हैं। भारत की कार्य बल का एक बड़ा हिस्सा खेती से जुड़ा है। अनुदान अचानक बंद करने से आय में झटका लगेगा, किसानों की आत्महत्या बढ़ेगी, गांवों में परेशानी होगी और बड़े पैमाने पर शहरों की ओर पलायन होगा।

तीसरा, भारत की खेती बड़े पैमाने पर छोटे किसानों पर निर्भर है, जबकि विकसित देशों में बड़े पैमाने पर मशीन वाले खेत हैं। इन किसानों में आर्थिक मज़बूती और मार्केट शक्ति की कमी है, जिससे जीवित रहने के लिए सरकार का सहायक होना ज़रूरी हो जाता है।

चौथा, अनुदान संरचना असमानताओं और पुराने नुकसानों को ठीक करने में मदद करती हैं। भारतीय किसानों को ज़मीन के टुकड़े, ऋण तक सीमित पहुँच, कम संरचना और मौसम जोखिम जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अनुदान गलत फ़ायदों के बजाय मुआवज़े के तरीके के तौर पर काम करती हैं।

पांचवां, भारत की अनुदान मुख्य रूप से कल्याण पर आधारित हैं, निर्यात पर आधारित नहीं। इसका मकसद घरेलू खाद्य सुरक्षा है, मार्केट डंपिंग नहीं। यह भारत के मामले को विकसित देशों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली निर्यात अनुदान से नैतिक और आर्थिक रूप से अलग बनाता है। आखिर में, भारत ने WTO में लगातार ''पीस क्लज़'' की वकालत की है, जिससे विकसित देश खाद्य सुरक्षा के लिए आम स्टाक होल्डिंग प्रोग्राम तब तक जारी रख सकें जब तक स्थायी समाधान नहीं मिल जाता। यह राष्ट्रीय हित की सुरक्षा करते हुए बहुपक्षीय के प्रति भारत के प्रतिबद्धता को दिखाता है।

नतीजा

भारतीय खाद्य निगम और भारत सरकार की अधिप्राप्ति और अनुदान पॉलिसी भारत की खाद्य सुरक्षा और कृषि स्थिरता की रीढ़ हैं। अधिप्राप्ति, भंडारण और वितरण में भारतीय खाद्य निगम की भूमिका किसानों के लिए सही दाम और उपभोगकर्ताओं के लिए सस्ता भोजन तय करती है। अनुदान के तहत सरकारी खरीद किसानों की रोज़ी-रोटी को सपोर्ट करती है, मार्केट को स्थिर करती है और ज़रूरी कल्यानकारी कार्यक्रम को बनाए रखती है।

WTO और विकसित देशों के दबाव के बावजूद, भारत का कृषि अनुदान जारी रखना उसकी खास सामाजिक-आर्थिक असलियत, विकास की ज़रूरतों और अपनी आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा पक्का करने की नैतिक ज़िम्मेदारी की वजह से सही है। जब तक वैश्विक व्यापार नियम ज्यादा बराबर और ज़मीनी हकीकत को दिखाने वाले नहीं हो जाते, तब तक भारत की कृषि अनुदान इनक्लूसिव और स्थिरता के विकास के लिए न सिर्फ़ ज़रूरी है बल्कि आवश्यकता के रूप में बनी हुई है।

शरण्या एस
सहायक श्रेणी तृतीय (सामान्य)
मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर

मिट्टी की महक

बरसात की पहली बूँद के संग
जब धरती साँस भरती है,
सूखी दरारों के बीच कहीं
जीवन की रेखा उभरती है।
मिट्टी की महक में छिपी होती हैं
बीते मौसमों की कथाएँ,
हल की रेखाओं में लिखी हुई
किसानों की अनकही व्यथाएँ।
आँगन में भीगा तुलसी का बिरवा,
छप्पर पर नृत्य करती धार,
प्रकृति का यह मधुर निमंत्रण
मन को करता बारंबार पुकार।
यह वही मिट्टी है
जिससे तन, मन और अन्न जुड़े हैं;
यही हमारे अस्तित्व का आधार,
यही हमारे सपनों के धागे बुने हैं।
जब भी जीवन थकने लगता है,
मैं गाँव की राह पकड़ लेती हूँ –
मिट्टी की उस सोंधी गंध में
अपना बिखराव समेट लेती हूँ।

मनीष कुमार यादव
सहायक श्रेणी प्रथम (सामान्य)
मंडल कार्यालय, चेन्नै

नालंदा विश्वविद्यालय

नालंदा प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात केन्द्र था। महायान बौद्ध धर्म के इस शिक्षा केन्द्र में हीनयान बौद्ध धर्म के साथ ही अन्य देशों के छात्र पढ़ते थे। वर्तमान बिहार राज्य में पटना से 85.5 किलोमीटर दूर राजगीर मे नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी।

नालंदा एक प्रशंसित महाविहार था, जो भारत में प्राचीन साम्राज्य मगध ; आधुनिक बिहार में एक बड़ा बौद्ध मठ था। यह स्थल बिहार शरीफ शहर के पास पटना के लगभग 85 किलोमीटर दक्षिणपूर्व में स्थित हैए और पांचवीं शताब्दी सी.ई. से 1200 सी.ई. तक अध्ययन का प्रमुख केंद्र था। यह यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल है।

राजगीर की पहाड़ियों के किनारे स्थित पुनर्जीवित नालंदा विश्वविद्यालय का आह्वान है। ''सीखना ही यहाँ होना है।'' इस बौद्धिक परिदृश्य में होने का अनुभव प्रकृति और मनुष्य के बीच तथा जीवन और सीखने के बीच सहज सह-अस्तित्व के साथ सशक्त बनाता है। यह क्षेत्र भगवान बुद्धए भगवान महावीर जैसे आध्यात्मिक महापुरुषों द्वारा प्रदत्त सकारात्मकता से ओतप्रोत हैए जिन्होंने इस क्षेत्र में ध्यान किया था और नागार्जुन, आर्यभट्ट, धर्मकीर्ति जैसे महान आचार्यों द्वारा विकसित विद्वत्तापूर्ण परंपराओं से भी जिन्होंने प्राचीन नालंदा में प्रवचन दिए थे। प्राचीन मगध की विशेषता एक बौद्ध की उथल-पुथल थी जो मानवता को शायद ही कभी ज्ञात हो। विविध प्रवचनों को समझने और ज्ञान को उसकी संपूर्णता में आत्मसात करने का अवसर ही नालंदा के शिक्षाशास्त्र को सभी जिज्ञासुओं के लिए अद्वितीय और आकर्षक बनाता है।

सम्राट कुमारगुप्त की उदारता से 427 ई. में नालंदा में स्थापित और विद्वान भिक्षुओं एवं शिक्षकों की कर्तव्यनिष्ठा से पोषित विश्व का पहला आवासीय विश्वविद्यालय 12वीं शताब्दी के अंत तक 800 वर्षों से भी अधिक समय तक फला-फूला। ऐसा माना जाता है कि इसमें 2,000 शिक्षक और 10,000 छात्र थे। नालंदा ने चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत, मंगोलिया, श्रीलंका और दक्षिण पूर्व एशिया जैसे दूर-दराज के स्थानों से विद्वानों को अपने परिसर में आकर्षित किया था। उन विद्वानों ने नालंदा के वातावरण, वास्तुकला और शिक्षा के साथ-साथ नालंदा के शिक्षकों के गहन ज्ञान के बारे में भी अभिलेख छोड़े हैं। सबसे विस्तृत विवरण चीनी विद्वानों से प्राप्त हुए हैं और इनमें से सबसे प्रसिद्ध विद्वान ह्वेन त्सांग हैं, जो सैकड़ों ग्रंथ अपने साथ ले गए थे जिनका बाद में चीनी भाषा में अनुवाद किया गया।

मार्च 2006 में बिहार राज्य विधानसभा के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए भारत के पूर्व राष्ट्रपति डां ए पी जे अब्दुल कलाम ने प्राचीन नालंदा के पुनरुद्धार का प्रस्ताव रखा। प्राचीन नालंदा की पुनर्स्थापना की मांग को लेकर सहमत विचार एक साथ आए सिंगापुर सरकार से जनवरी 2007 में फिलीपींस में पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) के सोलह सदस्य राज्यों के नेताओं से और चौथे शिखर सम्मेलन में अक्टूबर 2009 में थाईलैंड में। भारत की संसद ने नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010 पारित किया और सितंबर 2014 में छात्रों के पहले बैच का नामांकन हुआ। मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार सरकार ने एक महत्वपूर्ण स्थान पर विश्वविद्यालय परिसर के लिए 455 एकड़ जमीन आवंटित करने में देर नहीं लगाई। बीण्वीण् दोशी ने प्राचीन नालंदा के वास्तु को प्रतिबिंबित करते हुए, विश्व मानकों के अनुरूप सभी आधुनिक सुविधाओं को समाहित करते हुए, पर्यावरण-अनुकूल वास्तुकला का डिज़ाइन तैयार किया है। यह एक विशाल कार्बन-फुटप्रिंट-मुक्त नेट-ज़ीरो परिसर है। जो सैकड़ों एकड़ हरियाली और 100 एकड़ जलाशयों में फैला है और वास्तव में शिक्षा का एक केंद्र है।

नालंदा एक साथ भविष्योन्मुखी है, क्योंकि इस प्राचीन शिक्षा केंद्र के आदर्श और मानक, न केवल एशिया बल्कि सभी के लिए एक साझा और टिकाऊ भविष्य के लिए व्यावहारिक समाधान के रूप में अपनी प्रासंगिकता में सार्वभौमिक साबित हुए हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार की पहल का दुनिया भर में सर्वसम्मति और उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया है।

एस बाक्कियलक्ष्मी
सहायक श्रेणी प्रथम (तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

जीवन की गुणवत्ता और इसकी विशेषताएँ

एक जंगल में सेब और आम का पेड़ रहता था। हर रात शेर और बाघ उनके नीचे सोने आते थे। आम के पेड़ को ये जानवर पसंद नहीं थे। उसने कहा, ''ये बहुत शोर करते हैं। इनसे बदबू आती है। मैं इन्हें भगा दूँगा।''

सेब के पेड़ ने कहा, ''ऐसा मत करो। हमें एक-दूसरे की ज़रूरत है। जानवर और पेड़ एक-दूसरे की मदद करके खुशी-खुशी साथ रह सकते हैं।'' लेकिन आम के पेड़ ने एक न सुनी। उस रात उसने ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें निकालीं। जानवर डरकर भाग गए। अगली रात, दो लकड़हारे जंगल में आए। उन्होंने बड़े आम के पेड़ को देखा। उन्होंने चारों ओर देखा। उन्हें डराने के लिए कोई जंगली जानवर नहीं था और आम का पेड़ काट दिया गया।

सेब के पेड़ ने उदास होकर कहा, ''शेर और बाघ हमें सुरक्षित रखते थे। अब हमें सुरक्षित रखने वाला कोई नहीं है।'' अगर हम एक-दूसरे की मदद और सहारा नहीं देंगे, तो हमें नुकसान होगा। इसी प्रकार हमारे जीवन में भी दो सबसे महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। एक है आपसी समझ और दूसरा है दिल खोलकर देना। उपर्युक्त कहानी में, आम का पेड़ एक परिवार की तरह है और जंग. ली जानवर उन बुजुर्गों की तरह हैं जो परिवार को एक स्तंभ की तरह सहारा देते हैं। जब आपसी समझ में कमी आती है, तो परिवार बिखर जाता है और परिवार को सुरक्षित रखने वाला कोई नहीं होता। इसलिए बड़ों का सम्मान करें। और याद रखें, हम जो देंगे, वही हमें वापस मिलेगा। इसके अलावा, हम सभी ने दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति, भगवान कुबेर के बारे में सुना है। एक दिन, भगवान गणेश बहुत भूखे थे और दोपहर के भोजन के लिए उनके घर गए। भगवान कुबेर ने उनका स्वागत किया और उन्हें खूब सारा भोजन कराया। लेकिन भगवान गणेश अभी भी भूखे थे। एक समय, भगवान कुबेर को समझ नहीं आया कि क्या करें और उन्होंने भगवान शिव की मदद ली। भगवान शिव ने पूरे मन से केवल एक पोहा अर्पित किया और भगवान गणेश की भूख मिट गई। उपरोक्त बातों से हमें यही सीख मिलती है कि हम जो भी करें, उसमें पूरी लगन और तन-मन से जुट जाएँ, और निश्चित रूप से आपका कार्य सफल होगा।

कहानी का नैतिक संदेश - 'मानव जीवन का उद्देश्य सेवा करना, करुणा दिखाना और दूसरों की मदद करने की इच्छाशक्ति रखना है।'

बी नागमल्ली
सहायक श्रेणी प्रथम (सामान्य)
मंडल कार्यालय, वेल्लोर

निडर और समृद्ध : एकल महिलाओं की दैनिक विजय

'उद्देश्यपूर्ण स्वतंत्रता को अपनाना' :

दुनिया भर की अविवाहित महिलाएँ सिर्फ़ अकेले जीवन नहीं जी रही हैं

- वे अपनी शर्तों पर फल-फूल रही हैं
- वे दिखाती हैं कि स्वायत्तता कैसे व्यक्तिगत और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देती है

'मैं बिना किसी शर्मिंदगी के एक अविवाहित महिला हूँ और मुझे एहसास हुआ है कि एकांत में शक्ति है अपेक्षाओं से मुक्त होकर, अपनी असलियत जानने की जगह।'

चिमामांडा

नगोज़ी अदिची

आत्मनिर्भरता और लचीलेपन की कला :

आत्मनिर्भरता कई अविवाहित महिलाओं के लिए आधारशिला है :

- टपकते नल को ठीक करने जैसे छोटे-मोटे काम करना
- बड़ी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करना, जैसे कि एक गैर-लाभकारी संस्था की स्थापना करना

'आपको खुद के प्यार से भरना होगा। अगर आप खुद से प्यार नहीं करतीं, तो आप किसी और का ख्याल नहीं रख सकतीं। आप दूसरों की सेवा नहीं कर सकतीं।'

कृमिशेल ओबामा

रूढ़िवादिता और सांस्कृतिक अपेक्षाओं को चुनौती देना :

अविवाहित महिलाएँ सामाजिक दबावों का साहसपूर्वक सामना करें

- जाँच-पड़ताल और अनचाही सलाह पर विजय पाना
- पुरानी रूढ़ियों को नकारना

'मैं अकेली रहकर खुश हूँ। मैं इसे स्वयं-साथी होना कहती हूँ।' **एम्मा वहटसन**

यह पुनर्रचना महिलाओं को अपनी सच्ची कहानियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित और सशक्त बनाती है।

कार्यस्थल और उसके बाहर नेतृत्व -

अविवाहित महिलाएं इन रूपों में अपनी पहचान बना रही हैं -

- संस्थापक
- वैज्ञानिक
- शिक्षक
- नेता

'जब आप अविवाहित होते हैं, तो आप बिना किसी समझौते के अपनी महत्वाकांक्षाएँ तय कर सकते हैं।' कृटिफ़नी डुफू, नेतृत्व प्रशिक्षक

उनकी यात्राएँ दर्शाती हैं कि पारंपरिक अपेक्षाओं से मुक्ति कैसे प्राप्त होती हैरू

- रचनात्मकता
- साहस
- करुणा

चुने हुए समुदायों का निर्माण संबंध केंद्रीय रहता है :

- अविवाहित महिलाएं जानबूझकर सहायक मंडलियों का पोषण करती हैं
- रोमांस या परिवार से परे रिश्तों पर ध्यान केंद्रित करती हैं

'एक महिला का स्थान वहीं होता है जहाँ वह रहना चाहती है, उन लोगों के बीच जहाँ वह भरोसा करती है और प्यार करती है।' **लिजाबेथ गिल्बर्ट**

बिना पटकथा के जीवन का आनंद -

अविवाहित महिलाएं खुशी को इस प्रकार परिभाषित करती हैंरू

- प्रामाणिकता
- आत्म-निर्देशन
- अपनी शर्तों पर जीवन जीना

'मेरा जीवन मेरा है। मैं मैंने इसे अपनाया है और मैंने इसे चुना है। और मैं इसे अपने लिए कारगर बना रही हूँ।' **ट्रेसी एलिस रास**

निष्कर्ष : कहानी का पुनर्लेखन

- दुनिया भर में अविवाहित महिलाएँ सिर्फ़ धीरज नहीं रख रही हैं। वे फल-फूल रही हैं
- वे साहस, बुद्धि और लचीलेपन के साथ नेतृत्व करती हैं
- उनकी स्वतंत्रता, उनकी स्वतंत्रता की घोषणा है।

• उनकी कहानियाँ भीतर से पूर्णता का प्रमाण हैं

• रूढ़ियों को तोड़कर और चुने हुए समुदायों को गढ़कर, वे समृद्धि को नए सिरे से परिभाषित करती हैं

एक परिवर्तनशील दुनिया में, अविवाहित महिलाएँ हमें दिखाती हैं :

एक सार्थक जीवन परिस्थितियों से नहीं, बल्कि उद्देश्य, जुड़ाव और एक अनोखी नियति रचने के साहस से परिभाषित होता है।

'कोई एक कहानी नहीं होती। हममें से हर एक को अपनी कहानी खुद ढूंढनी होगी।'

चिमामांडा नगोज़ी अदिची

हर दिन, अविवाहित महिलाएँ साबित करती हैं कि उनकी कहानियाँ कितनी उज्ज्वल और असीम हो सकती हैं।

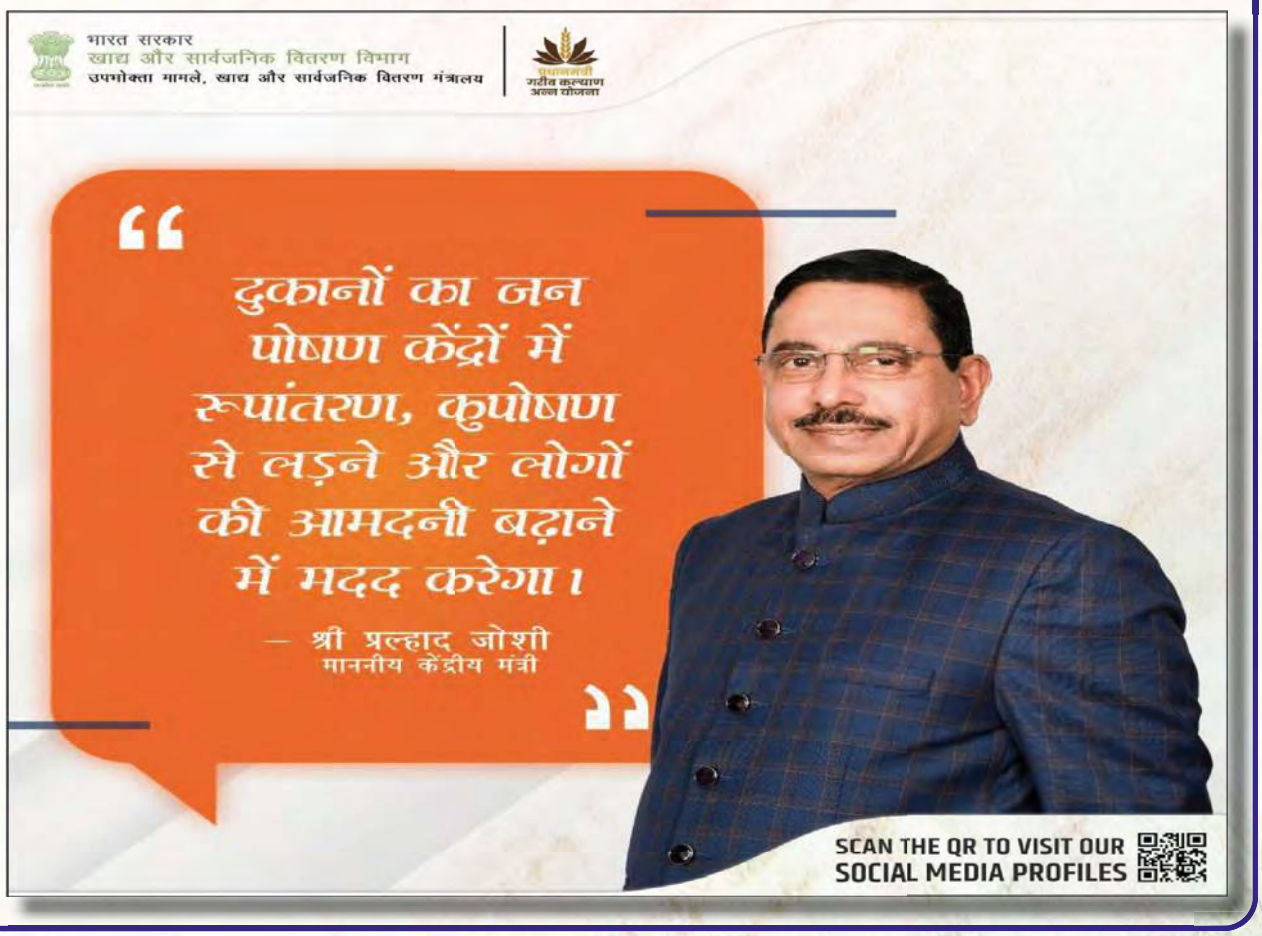

विक्टर बोस
सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)
मंडल कार्यालय, वेल्लोर

विश्व भूख और खाद्य अपव्यय: एक ही सिक्के के दो पहलू

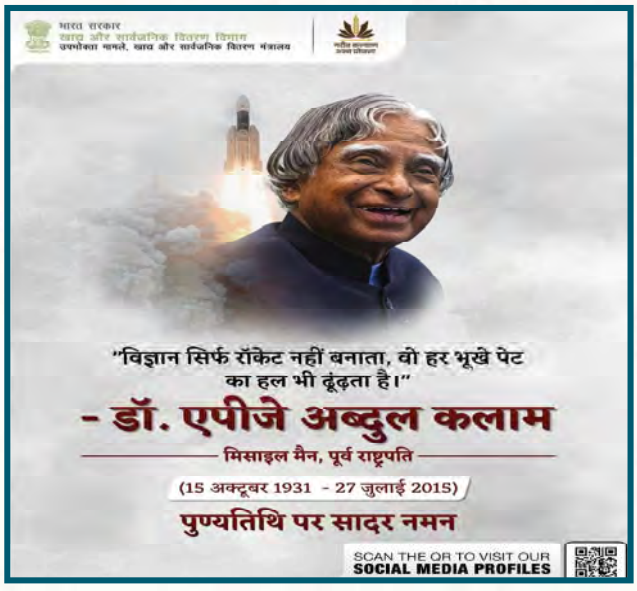

आज का आधुनिक युग विज्ञान, तकनीक और उत्पादन के क्षेत्र में जितनी ऊँचाइयों को छू रहा है, उतना ही चिंताजनक यह भी है कि विश्व की एक बड़ी जनसंख्या भूख और कुपोषण से जूझ रही है। दूसरी ओर, आश्चर्यजनक रूप से हर साल करोड़ों टन खाद्य पदार्थ बर्बाद कर दिए जाते हैं। यह विरोधाभास हमें एक कठोर सत्य की ओर इशारा करता है विश्व भूख और खाद्य अपव्यय वास्तव में एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

विश्व में भूख की भयावह स्थिति :

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, विश्व में लगभग 80 करोड़ से अधिक लोग आज भी पर्याप्त भोजन नहीं पा पाते। इनमें अधिकांश बच्चे, महिलाएँ और गरीब समुदाय शामिल हैं। भूख केवल भोजन की कमी नहीं, बल्कि यह :

- कुपोषण,
- मानसिक व शारीरिक विकास में बाधा,

- और जीवन प्रत्याशा में गिरावट जैसी समस्याओं को जन्म देती है।

अफ्रीका, दक्षिण एशिया और लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों में भूख की समस्या और भी विकराल है।

खाद्य अपव्यय : एक वैश्विक विडंबना :

एक ओर लोग भोजन के लिए तरसते हैं, दूसरी ओर वैश्विक स्तर पर हर साल लगभग 1.3 अरब टन खाना बर्बाद कर दिया जाता है। यह विश्व में उत्पादित कुल भोजन का एक-तिहाई हिस्सा है।

खाद्य अपव्यय के प्रमुख कारण हैं :

- उपभोक्ताओं द्वारा जरूरत से ज्यादा खरीदारी और खाने की बर्बादी
- होटल, रेस्टोरेंट और शादी जैसे आयोजनों में प्लेट में छोड़ा गया भोजन
- खराब वितरण प्रणाली और भंडारण की कमी
- फसलों की कटाई के बाद की बर्बादी

यह अपव्यय न केवल नैतिक रूप से गलत है, बल्कि यह प्राकृतिक संसाधनों का भी भारी नुकसान करता है - जैसे जल, भूमि, श्रम और ऊर्जा।

क्यों हैं दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए ?

यह समझना जरूरी है कि जहां एक ओर करोड़ों लोग भूख से पीड़ित हैं, वहीं दूसरी ओर जो खाना बर्बाद हो रहा है, वह यदि सही ढंग से वितरित किया जाए तो भूखमरी की समस्या काफी हद तक कम हो सकती है।

यह असमानता वितरण, जागरूकता और नीतिकी असफलता को दर्शाती है। एक ओर अन्न गोदामों में सड़ता है, दूसरी ओर लोग भूख से मरते हैं - यह केवल आर्थिक ही नहीं, नैतिक विफलता भी है।

भारत की स्थिति

भारत, एक कृषि प्रधान देश होते हुए भी, ग्लोबल हंगर इंडेक्स में पीछे है। यहाँ हर साल लगभग $14 अरब मूल्य का भोजन बर्बाद हो जाता है।

- शादी समारोह, त्योहारों और होटल उद्योग में बड़ी मात्रा में खाना फेंका जाता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में कोल्ड भंडारण और यातायात की कमी से फल और सब्ज़ियाँ खराब हो जाती हैं।

यह स्थिति दर्शाती है कि खाद्य सुरक्षा केवल उत्पादन से नहीं, बल्कि प्रबंधन और जिम्मेदारी से सुनिश्चित की जा सकती है।

समाधान के उपाय

1. खाद्य वितरण प्रणाली में सुधार : सरकार और गैर-सरकारी संस्थाओं को मिलकर सप्लाई चेन को मजबूत करना होगा।

2. भोजन बचाओ अभियान : जागरूकता के लिए अभियान चलाना, जैसे – 'थाली में जितना खाओ, उतना ही लो।'

3. अतिरिक्त भोजन का पुनर्वितरण : रेस्टोरेंट, कैटरिंग और आयोजनों से बचा खाना NGO या फूड बैंक तक पहुंचाया जा सकता है।

4. तकनीकी नवाचार : खाद्य संरक्षण, कोल्ड स्टोरेज और डिजिटल ट्रैकिंग के लिए तकनीक का उपयोग।

5. नीतिगत सुधार : कड़े खाद्य अपव्यय विरोधी कानून, जैसे कई यूरोपीय देशों में हैं, भारत और अन्य देशों में भी लागू किए जाने चाहिए।

नैतिक जिम्मेदारी भी जरूरी है

भोजन केवल संसाधन नहीं, एक आशीर्वाद और मानवाधिकार है। इसे फेंकना, जब किसी और को इसकी सख्त ज़रूरत है, हमारे समाज और संस्कारों पर प्रश्न चिह्न लगाता है। यह हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह खाने को बचाए, बाँटे और दूसरों के लिए भी सोचे।

निष्कर्ष

विश्व भूख और खाद्य अपव्यय को अलग-अलग समस्याएं नहीं माना जा सकता। ये आपस में गहराई से जुड़ी हुई चुनौतियाँ हैं, जिनका हल केवल नीति या सरकारों से नहीं, बल्किहर नागरिक की भागीदारी सेनिकलेगा। अगर हम आज चेत गए और अपने व्यवहार में बदलाव लाए, तो शायद हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक भूख-मुक्त और न्यायपूर्ण दुनिया बना सकें।

पंकज सिंह
सहायक श्रेणी तृतीय (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, कडलूर

भारत की प्रगति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधुनिक युग की सबसे प्रभावशाली तकनीकों में से एक है। यह ऐसी तकनीक है जिसमें मशीने मानव बुद्धि की तरह सोचने, सीखने, निर्णय लेने और समस्याओं का समाधान करने में सक्षम होती हैं। भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे देश में कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकास की गति को तेज करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सबसे पहले शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने नई संभावनाएँ खोली हैं। स्मार्ट लर्निंग प्लेटफार्म, ऑनलाइन शिक्षा ऐप्स और व्यक्तिगत सीखने की प्रणालियाँ छात्रों की क्षमता और रुचि के अनुसार अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराती हैं। इससे ग्रामीण और दूरदराज़ क्षेत्रों के छात्रों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित मूल्यांकन प्रणालियाँ शिक्षकों का समय बचाती हैं और छात्रों की कमज़ोरियों की पहचान करने में मदद करती हैं।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत की प्रगति में सहायक सिद्ध हो रहा है। रोगों की जल्दी पहचान, मेडिकल इमेजिंग का विश्लेषण, दवाओं की खोज और टेलीमेडिसिन जैसी सेवाओं में इसका व्यापक उपयोग हो रहा है। इससे न केवल

इलाज सस्ता और सुलभ हुआ है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध हो रही हैं।

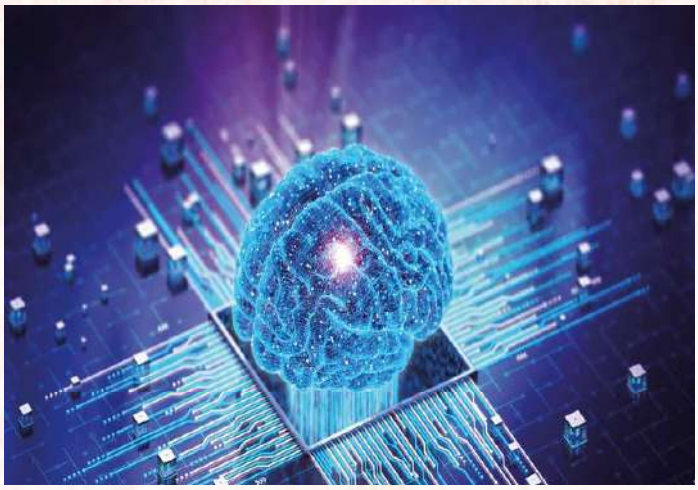

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और इस क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है। फसल की गुणवत्ता का आकलन, मौसम की भविष्यवाणी, मिट्टी की जांच और कीट नियंत्रण के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। इससे किसानों की आय बढ़ रही है और कृषि अधिक टिकाऊ बन रही है।

उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता उत्पादन क्षमता बढ़ाने, लागत घटाने और निर्णय प्रक्रिया को बेहतर बनाने में मदद कर रहा है। स्टार्टअप्स और आईटी कंपनियाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से नए रोज़गार के अवसर भी सृजित कर रही हैं। ग्राहक सेवा में चौटबाट्स, डेटा विश्लेषण और स्वचालन ने व्यापार को अधिक प्रभावी बनाया है।

सरकार भी शासन प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कर रही है। स्मार्ट सिटी परियोजनाएँ, यातायात प्रबंधन, अपराध नियंत्रण और जन कल्याणकारी योजनाओं की निगरानी में यह तकनीक सहायक है। इससे पारदर्शिता बढ़ी है और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

निष्कर्षतः कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत की प्रगति का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। यदि इसे नैतिकता, कौशल विकास और समावेशी दृष्टिकोण के साथ अपनाया जाए, तो यह भारत को आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी रूप से और अधिक सशक्त बना सकता है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत को वैश्विक मंच पर अग्रणी राष्ट्र बनाने में अहम भूमिका निभाएगा।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

सुमित्रानंदन पंत

के जूलियट
सहायक श्रेणी प्रथम (तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

महिला दिवस

महिला दिवस महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उपलब्धियों का जश्न मनाने वाला एक वैश्विक दिवस है।

यह दिन शायद उन कई देशों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहाँ महिलाएँ असमानता का सामना कर रही हैं, उत्पीड़न का सामना कर रही हैं और मुख्य रूप से उन चुनौतियों और कठिनाइयों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए है। जिनका सामना महिलाएँ आजकल कर रही हैं।

जीवन, समाज, परिवार और कार्य में महिलाओं के योगदान के बारे में इतनी जागरूकता और स्वीकृति के बाद, उनकी शक्ति और त्याग को अभिवादन करने के बाद भी, उन्हें पुरुषों के बाद दूसरे स्थान पर क्यों माना जाता है?

क्या पुरुष दोषी हैं? मैं वास्तव में नहीं कहती।

बात यह है कि हम कभी यह नहीं मानते कि हम इतना कुछ करने में सक्षम हैं और यह निर्विवाद तथ्य है कि अधिकांशतः महिलाएँ ही स्वयं महिलाओं के लिए बाधाएँ बनती हैं।

महिलाओं को कुछ भी हासिल करने के लिए किसी भी स्थान पर और किसी भी कीमत पर अपना आत्म सम्मान नहीं खोना चाहिए, बल्कि खुद का सम्मान करके और खुद के साथ सम्मान से पेश आकर, आप दूसरों के लिए भी सम्मान का माहौल तैयार करती हैं। आत्म-विश्वास, आत्म-सम्मान, खुद पर विश्वास, एक दृष्टिकोण और सबसे महत्वपूर्ण विषय, अन्य महिलाओं का समर्थन करके, महिलाएँ सच्चे महिला सशक्तिकरण की ओर अग्रसर होती हैं।

कार्यक्षेत्र बदल रहा है, तकनीक दिन-प्रतिदिन बेहतर हो रही है, लेकिन लैंगिक असमानता, महिला उत्पीड़न, महिलाओं को काम करने के लिए मजबूर करना न केवल कुछ देशों में, बल्कि दुनिया भर में बढ़ रहा है। महिलाएँ अपने जीवन में इन कठिनाइयों का सामना कर रही हैं। दुनिया के किसी भी हिस्से में हर पल महिलाओं को उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है। यह सब हमारे हाथ में है, हमें दुनिया को बदलना होगा और लोगों में जागरूकता फैलानी होगी।

पुरुष भी एक महिला के जीवन में पिता, भाई, दादा, चाचा, पति, पुत्र, शिक्षक, सलाहकार और मित्र जैसी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाते हैं। इन सभी भूमिकाओं का प्रभाव और मानसिकता एक महिला के सच्चे सशक्तिकरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अपनी बेटी को उसके सपने तलाशने और उन्हें हासिल करने में मदद करने, घर पर एक महिला के प्रयासों की सराहना करने और उसकी मदद करने, सभी बच्चों को समान मानने, चाहे वह लड़का हो या लड़की, एक महिला को खुद पर विश्वास दिलाना और उसे कुछ ज़रूरी फैसले लेने देकर उसका आत्मविश्वास बढ़ाना, एक महिला को सुरक्षित महसूस कराना और परिवार जैसी बुनियादी इकाई में महिलाओं के प्रति दिखाए गए अन्य विचारशील व्यवहार जैसी छोटी-छोटी बातें, किसी भी महिला दिवस समारोह से कहीं ज्यादा समाज पर सकारात्मक और ज़बरदस्त प्रभाव डालेंगी।

एक महिला अपनी आखिरी साँस तक अपने प्रियजनों के लिए सब कुछ करती है;
खाना बनाना, सफाई करना, अपने माता-पिता की देखभाल करना, बच्चों का पालन-पोषण करना,
वह सब कुछ जो आपको फ़ायदा पहुँचाता है,
आपको खुश रखता है,
कभी-कभी अपने स्वास्थ्य, शौक, लक्ष्य वगैरह का त्याग भी कर देती है।
तो, प्रिय सज्जनों,
उसके लिए समय बिताएँ - वह इसे संजोती है।
उसका ख्याल रखें - वह सुरक्षित महसूस करती है।
उसे पहचानें - वह इसकी सराहना करती है।
उसका बोझ बाँटें - इससे उसे सुकून मिलता है।
उसका साथ दें - वह ज़िंदा महसूस करती है।
अपने वादे पूरे करें - वह इसकी उम्मीद करती है।
उससे प्यार करो - उसे बहुत अच्छा लगता है।
औरत होना आसान नहीं है, अपने जीवन में हमेशा उस औरत की कद्र करो और उसे महत्व दो।
क्योंकि, औरत एक धन्य रचना है।

आर सुब्रमनियन
सहायक श्रेणी द्वितीय (डिपो)
मंडल कार्यालय, कडलूर

भारत में बेरोजगारी : कारण, प्रभाव और समाधान

बेरोज़गारी किसी भी देश के लिए केवल आर्थिक समस्या नहीं होती, बल्कि यह एक गंभीर सामाजिक और राजनीतिक चुनौती भी होती है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा युवा वर्ग का है, बेरोज़गारी की समस्या और भी चिंताजनक हो जाती है। आज भारत में शिक्षा के विस्तार और तकनीकी प्रगति के बावजूद पर्याप्त रोज़गार के अवसर उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं, जिससे यह समस्या दिन-प्रतिदिन जटिल होती जा रही है।

भारत में बेरोज़गारी के अनेक संरचनात्मक और सामाजिक कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण तीव्र जनसंख्या वृद्धि है। जनसंख्या के अनुपात में रोज़गार के अवसरों का विकास नहीं हो सका है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा प्रणाली और रोज़गार बाज़ार के बीच तालमेल की कमी भी बेरोज़गारी को बढ़ावा देती है। बड़ी संख्या में युवा डिग्रियाँ तो प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन उनमें व्यावहारिक कौशल और तकनीकी दक्षता का अभाव होता है, जिसकी मांग उद्योग जगत करता है।

कृषि क्षेत्र में छिपी बेरोज़गारी भी भारत की एक विशिष्ट समस्या है। ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी संख्या में लोग कृषि पर निर्भर हैं, लेकिन भूमि सीमित है और उत्पादकता कम है। परिणामस्वरूप, कई लोग कार्यरत होते हुए भी वास्तविक रूप से बेरोज़गार ही होते

हैं। औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों का अपेक्षित विस्तार न हो पाने के कारण यह श्रम शक्ति वैकल्पिक रोज़गार नहीं पा पाती। बेरोज़गारी के दुष्परिणाम बहुआयामी हैं। आर्थिक दृष्टि से यह राष्ट्रीय आय को कम करती है और गरीबी को बढ़ावा देती है। सामाजिक स्तर पर बेरोज़गारी असंतोष, अपराध, नशाखोरी और मानसिक तनाव जैसी समस्याओं को जन्म देती है। लंबे समय तक बेरोज़गार रहने वाला युवा आत्मविश्वास खो देता है, जिससे उसकी उत्पादक क्षमता प्रभावित होती है। राजनीतिक दृष्टि से भी बेरोज़गारी अस्थिरता को जन्म दे सकती है, क्योंकि असंतुष्ट युवा वर्ग किसी भी समाज के लिए चुनौती बन सकता है।

हाल के वर्षों में तकनीकी विकास और स्वचालन ने भी रोज़गार की प्रकृति को बदला है। जहाँ एक ओर नई संभावनाएँ उत्पन्न हुई हैं, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक नौकरियों में कमी आई है। ऐसे में कौशल उन्नयन और पुनः कौशल विकास की आवश्यकता और भी बढ़ गई है। यदि युवा समय के अनुरूप स्वयं को ढालने में असफल रहते हैं, तो बेरोज़गारी की समस्या और गहरी हो सकती है।

इस समस्या के समाधान के लिए बहुस्तरीय प्रयास आवश्यक हैं। सबसे पहले, शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। शिक्षा को रोज़गारोन्मुख और कौशल-आधारित बनाना होगा। व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण और शिक्षुता कार्यक्रमों को बढ़ावा देकर युवाओं को व्यावहारिक रूप से सक्षम बनाया जा सकता है।

दूसरे, औद्योगिक विकास और निवेश को प्रोत्साहित करना होगा। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों का विस्तार रोज़गार सृजन का एक प्रभावी माध्यम बन सकता है। इसके साथ ही, स्टार्टअप और स्वरोज़गार को बढ़ावा देकर युवाओं को नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि नौकरी देने वाला बनाया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि रोज़गार के अवसर विकसित करना भी अत्यंत आवश्यक है। हस्तशिल्प, ग्रामीण उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण और सेवा क्षेत्र ग्रामीण बेरोज़गारी को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, बुनियादी ढाँचे के विकास से भी बड़े पैमाने पर रोज़गार सृजन संभव है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि बेरोज़गारी की समस्या का कोई एक समाधान नहीं है। इसके लिए सरकार, निजी क्षेत्र, शैक्षणिक संस्थानों और समाज सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे। यदि युवाओं की ऊर्जा और क्षमता का सही दिशा में उपयोग किया जाए, तो बेरोज़गारी को चुनौती से अवसर में बदला जा सकता है। एक रोजगारयुक्त समाज ही आर्थिक समृद्धि, सामाजिक स्थिरता और राष्ट्रीय विकास की आधारशिला बन सकता है।

धाना रूपा एम
सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)
मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर

ध्यान

मन की झील में जब तरंगें शांत होती हैं,
तभी आकाश का प्रतिबिंब स्पष्ट उतरता है।
विचारों का कोलाहल जब संयम में बंधता है,
तभी लक्ष्य का दीपक स्थिर प्रकाश करता है।
एकाग्रता कोई क्षणिक आवेग नहीं,
यह साधना है – अंतर के शोर पर विजय की।
यह वही धागा है जो बिखरे मोतियों को
अर्थ की माला में पिरो देता है।
जब इंद्रियाँ दिशाओं में भटकती हैं,
चित्त क्षण-क्षण अपना केंद्र खो देता है;
पर उचित एकाग्रता वह मध्यम मार्ग है
जहाँ ऊर्जा, संयम और सजगता संगम करते हैं।
यह कठोरता नहीं, न ही जड़ स्थिरता
यह सजग प्रवाह है, नियंत्रित पर जीवंत।
जैसे धनुर्धर की आँख में केवल लक्ष्य,
वैसे ही मन में केवल कर्म का स्पष्ट बोध।
विक्षेपों की आँधी में जो दीप न बुझे,
वही साधक अपने पथ का निर्माता है।
एकाग्रता वही अंतःशक्ति है
जो संभावनाओं को उपलब्धि में बदल देती है।
अतः मन को बाँधो नहीं, उसे दिशा दो;
विचारों को रोको नहीं, उन्हें केंद्र दो।
उचित एकाग्रता वह सेतु है
जो स्वप्न और सिद्धि के बीच निर्मित होता है।

तमिलनाडु क्षेत्र के अंतर्गत उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार

वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), चेन्नै द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु तृतीय पुरस्कार एवं उत्कृष्ट राजभाषा गृह पत्रिका हेतु तृतीय पुरस्कार से क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै को शील्ड और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए दक्षिणांचल में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु दक्षिणांचल के क्षेत्रीय कार्यालयों के स्तर पर क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै को द्वितीय पुरस्कार एवं मंडल कार्यालयों के स्तर पर मंडल कार्यालय, चेन्नै को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

वर्ष 2024-25 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कडलूर द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु हिंदी में सर्वोत्तम निष्पादन हेतु मंडल कार्यालय, कडलूर को शील्ड से पुरस्कृत किया गया।

तमिलनाडु क्षेत्र के अंतर्गत हिंदी दिवस/पखवाड़े की झलकियां

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

मंडल कार्यालय, चेन्नै

मंडल कार्यालय, कडलूर

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। – कमलापति त्रिपाठी

तमिलनाडु क्षेत्र के अंतर्गत हिंदी दिवस/पखवाड़े की झलकियां

मंडल कार्यालय, वेल्लोर

मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर

मंडल कार्यालय, तंजावुर

मंडल कार्यालय, तूतीकोरिन

गतिविधियाँ / कलाकृतियाँ

एस बी आरूद्रा
सुपुजी जी बालामुरली
सहायक श्रेणी द्वितीय (तक.)
मंडल कार्यालय, कडलूर

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित अबेकस प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार/ बधाईयां/

अंकिता वी
सुपुजी टी के गायजी
स.श्रे.II(तक.)
क्षे.का, चेन्नै

जेडिडा होसन्ना एस
सुपुजी क्रिस्टिना आनंदी
स.श्रे.II(तक.)
क्षे.का, चेन्नै

पि ए सुबथिनम
स.श्रे.II(तक.)
मं.का, तंजावुर

काव्या गुप्ता
सुपुजी कुणाल कुमार गुप्ता
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

गतिविधियाँ / कलाकृतियाँ

शौर्य कुमार पंडित
सुपुत्र राहुल कुमार पंडित
सहायक श्रेणी प्रथम (डिपो)
मंडल कार्यालय, चेन्नै

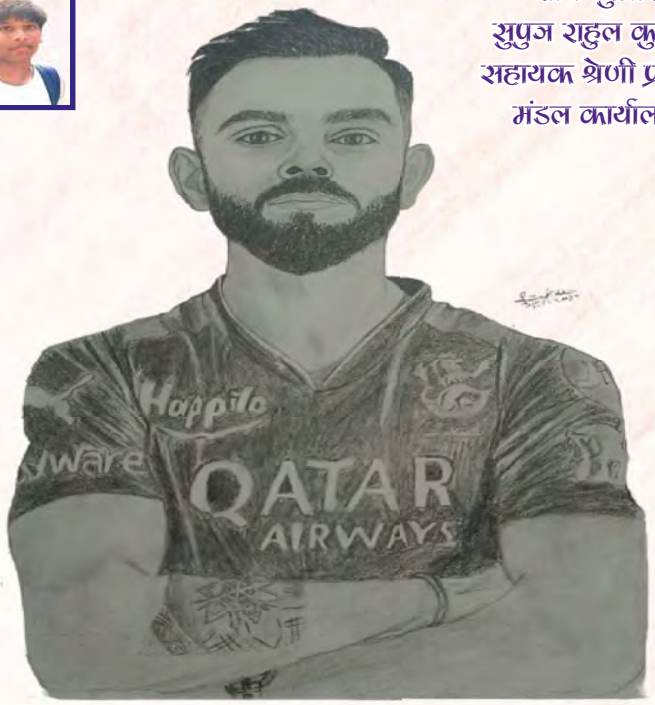

नैतिक गुप्ता
सुपुत्र कुणाल कुमार गुप्ता
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

अरज्या
सुपुत्री अरुण कुमार
उप महाप्रबंधक (रा.भा.)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

अर्ज्यान्श कुमार
सुपुत्र अरुण कुमार
उप महाप्रबंधक (रा.भा.)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

जी बालामुरली
स.श्रे.द्वितीय (तक.)
म.का, कडलूर

एन शक्तिराज
स.श्रे.तृतीय (सा.)
म.का, कडलूर

वार्षिक कार्यक्रम 2025-26
राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1.क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2.क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3.क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4.क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1.ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2.ख क्षे से ख क्षेत्र को 90% 3.ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1.ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2.ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3.ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4.ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 60%

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण स्वयं तथा सहायक	70%	60%	35%
7	हिंदी प्रशिक्षण भाषा, टंकण, आशुलिपि	100%	100%	100%
8	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोडकर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रानिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./नि.दे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण कार्यालयों का प्रतिशत	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(iii) केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	45%	35%	25%

वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए मूल रूप से हिंदी टिप्पण एवं आलेखन योजना में भाग लेनेवाले कार्मिकों की सूची

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती/सुश्री	पुरस्कार	नकद पुरस्कार
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै			
1	आर नीतू, सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
2	एन प्रगा, सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
3	समुयेल पॉल, सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
4	रुब कुमार बी, सहायक श्रेणी तृतीय (डिपो)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
5	गीथा सुंदरेसन, सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
6	के जूलियट, सहायक श्रेणी प्रथम (तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
7	पी दिवाहर, सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
8	पोलु प्रदीप, प्रबंधक (डिपो)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
9	ए भारती, सहायक श्रेणी प्रथम (सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
10	आर उषा, सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
मंडल कार्यालय, चेन्नै			
1	दिशा शर्मा, सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
2	पी विनोदिनी, सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
3	ए वी ग्रेस रजीना, सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
4	बि श्रीनिवासुलु, प्रबंधक (गुणवत्त नियंत्रण)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
5	सी कुमरवेल, प्रबंधक (सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
6	एच सैयद मुस्तफा, सहायक श्रेणी तृतीय (सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर			
1	सरन्या एस, सहायक श्रेणी द्वितीय (सामान्य)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
2	सबरी डी, सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
3	एस जनकर, सहायक श्रेणी तृतीय (डिपो)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
4	पी कन्नन, सहायक श्रेणी तृतीय (डिपो)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
5	सौम्या रसिका एस एस, सहायक श्रेणी तृतीय (सा.)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
6	प्रत्ति मोनिका, प्रबंधक (गुणवत्ता नियंत्रण)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
7	अखिलेश्वरण, सहायक श्रेणी तृतीय (डिपो)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
8	एलन जोय, सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
9	वैशाक जे, सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
10	गोआर्बाचेव के, सहायक श्रेणी तृतीय (सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	5000/-

वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए मूल रूप से हिंदी टिप्पण एवं आलेखन योजना में भाग लेनेवाले कार्मिकों की सूची

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती/सुश्री	पुरस्कार	नकद पुरस्कार
	मंडल कार्यालय, कडलूर		
1	आर सुब्रमनियन, सहायक श्रेणी तृतीस (डिपो)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
2	बालामुरली जी, सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
3	वी विजय कन्नन, सहायक श्रेणी तृतीय (सामान्य)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
4	वी श्रीदेवी, सहायक श्रेणी तृतीय (सामान्य)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
5	आलोक कुमार साहु, सहायक श्रेणी प्रथम (संचालन)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
6	अरुणा देवी वी, सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
7	सौंदरराजन एन, सहायक श्रेणी तृतीय (डिपो)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
8	ए शाजिदा, सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
	मंडल कार्यालय, तूतीकोरिन		
1	जे अंबु रत्नम, सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
2	मोहित कुमार चौधरी, प्रबंधक (डिपो)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
3	बफपालबीर सिंह, सहायक महाप्रबंधक (सामान्य)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
4	आनंद वी, सहायक श्रेणी तृतीय (लेखा)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
5	अरुमोझिवर्मन, सहायक श्रेणी तृतीय (डिपो)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
	मंडल कार्यालय, तंजावुर		
1	एस विमलराज, सहायक श्रेणी प्रथम (डिपो)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
2	पि ए सुबथिनम, सहायक श्रेणी द्वितीय (तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
3	आशोक जे, सहायक श्रेणी प्रथम (संचालन)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
4	आर मरीस्वरन, सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
5	भव्या जी, सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
6	के कट्टबोम्मन, सहायक श्रेणी तृतीय (सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
7	पी मदन कुमार, सहायक श्रेणी प्रथम (डिपो)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
8	गिरीश देथ, प्रबंधक (गुणवत्ता नियंत्रण)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
9	पी वेंकटेसन, सहायक श्रेणी तृतीय (डिपो)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
10	बी मोहनराज के, सहायक श्रेणी तृतीय (सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	5000/-

सबको हिंदी सीखनी ही चाहिए - इसके द्वारा भाव विनिमय से सारे भारत को सुविधा होगी। चक्रवर्ती राजगोपालचारी

वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए मूल रूप से हिंदी टिप्पण एवं आलेखन योजना में भाग लेनेवाले कार्मिकों की सूची

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती/सुश्री	पुरस्कार	नकद पुरस्कार
	मंडल कार्यालय, वेल्लोर		
1	कोमला वेलुमणि, सहायक श्रेणी द्वितीय (डिपो)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
2	बी नागमल्ली सहायक श्रेणी प्रथम (सामान्य)	प्रथम पुरस्कार	6000/-
3	पी एच के मंजरी, प्रबंधक (डिपो)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
4	प्रदीप सी, सहायक श्रेणी तृतीय (लेखा)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
5	एस अफ़ज़ल बाषा, सहायक श्रेणी प्रथम (लेखा)	द्वितीय पुरस्कार	5500/-
6	एन वैष्णवी, सहायक श्रेणी तृतीय (सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
7	के कनकराज, प्रबंधक (सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
8	अधुल एम वी, सहायक श्रेणी तृतीय (लेखा)	तृतीय पुरस्कार	5000/-
9	जी विग्नेश, सहायक श्रेणी तृतीय (डिपो)	तृतीय पुरस्कार	5000/-

राजभाषा हिंदी - आई.टी. टूल्स

अनुवादिनी (एआईसीटीई) – https://translation.aicte-india.org/translation-independent/

अनुवादिनी एक एआई आधारित बहुभाषी अनुवाद प्लेटफॉर्म है जिसे ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन (एआईसीटीई) ने बनाया है। इससे बडे पैमाने पर शैक्षणिक, तकनीकी और ज्ञान सामग्री का भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जा सकता है।

राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन (एनएलटीएम) – भाषिणी – https://anuvaad.bhashini.gov.in

राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन के तहत 2022 में शुरू किया गया भाषिणी, डिजिटल स्पेस में भारत की भाषाई विविधता को देखते हुए विकसित किया गया था। इस पहल का केन्द्र सीधे डिजिटल सिस्टम में भाषा और आवाज़ की क्षमताएं बनाने पर है। यह पब्लिक प्लेटफॉर्म को देश में इस्तेमाल होने वाली अनेक भाषाओं में प्रभावी ढंग से काम करने योग्य बनाती है।

भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास (टीडीआईएल) – https://tdil-dc.in/index.php?lang=en

टीडीआईएल भारत सरकार का एक पुराना कार्यक्रम है जिसने भारतीय भाषा कंप्यूटिंग के लिए बुनियादी टे. क्नोलॉजी का आधार तैयार किया, जिसमें कई भारतीय भाषाओं में आलेख, व्याख्यान और विषय शामिल हैं।

कंठस्थ 3.0 *बहुभाषी* – https://bharati.rajbhasha.gov.in/about

कंठस्थ 3.0 *बहुभाषी को हिंदी और संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध* 15 *भारतीय भाषाओं के बीच के अंतर को पाटने के लिए डिजाइन किया गया है, जो विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की प्राथमिक भाषाओं का प्रतिनिधित्व करता है. यह क्षेत्रीय भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने और भारत की भाषाई विरासत को संरक्षित करने में मदद करता है।*

अन्नालयम छठा अंक

दि 12 सितंबर, 2025 को कुत्तालम में तमिलनाडु क्षेत्र में कार्यरत वरिष्ठ अधिकारियों के लिए आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा संगोष्ठी की झलकियां

दि 18 मार्च, 2026 को चेन्नै में तमिलनाडु क्षेत्र में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा संगोष्ठी की झलकियां

वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए क्षेत्रीय स्तर पर राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु मंडल कार्यालयों को राजभाषा शील्ड पुरस्कार

प्रथम शील्ड पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री आनंद वी, मंडल प्रबंधक, मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर

द्वितीय शील्ड पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री देवेंद्र सिंह मर्तोलिया, मंडल प्रबंधक,
मंडल कार्यालय, चेन्नै

तृतीय शील्ड पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री के रोहिनेश्वर कुमार, मंडल प्रबंधक,
मंडल कार्यालय, तंजावुर

मनुष्य सदा अपनी मातृभाषा में ही विचार करता है। इसलिए अपनी भाषा सीखने में जो सुगमता होती है दूसरी भाषा में हमको वह सुगमता नहीं हो सकती।

डॉ मुकुन्दस्वरूप वर्मा